Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 49

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

7 रबीउल सानी 1441 हिजरी कमरी 5 फतह 1398 हिजरी शमसी 5 दिसम्बर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ (अल-बक़र :256) अर्थात अल्लाह तआला ही एक ऐसी ज़ात है जो पूर्ण गुणों वाली और हर एक दोष से पवित्र है। वही इबादत के योग्य है। इसी का वजूद प्रमाणों के प्रमाणित है क्योंकि वह ही अपने आप जीवित और अपनी ज़ात में क़ाय है और उस के अतिरिक्त और किसी चीज़ में ही अपने आप और स्वयं क़ायम होने के गुण नहीं पाए जाते।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इन्सानी हस्ती का उद्देश्य

नफ़्स मुतमइन्नह की यह निशानी है कि किसी बाहरी तहरीक के अतिरिक्त ही वह ऐसी अवस्था पकड़ जाता है कि ख़ुदा के बिना रह नहीं सकता और यही इन्सानी हस्ती का उद्देश्य है और ऐसा ही होना चाहिए। फ़ारिग़ इन्सान शिकार , शतरंज , गंजिंफ़ा इत्यादि काम अपने लिए पैदा कर लेते हैं मगर मुतमइन्नह जबकि नाजायज़ और अस्थायी और कई बार रंज और वेदना पैदा करने वाले कामों से अलग हो गया। अब अलग हो कर मुनक़ते आलिम उसे क्यों याद आए। इसलिए ख़ुदा ही से मुहब्बत हो जाती है। यह बात भी दिल से मिटनी चाहिए कि मुहब्बत दो किस्म की होती है। एक ज़ाती मुहब्बत होती है और एक मुहब्बत उद्देश्यों से जुड़ी होती है या यह कहो कि इस का कारण केवल कुछ आरिज़ी बातें होती हैं जिनके दूर होते ही वह मुहब्बत ठण्डी हो कर रंज और ग़म का कारण हो जाती है मगर ज़ाती मुहब्बत सच्ची राहत पैदा करती है। क्योंकि इन्सान फितरत से ही ख़ुदा ही के लिए पैदा हुआ है। जैसा कि फ़रमाया مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (अज़्ज़ारियात:57) इस लिए ख़ुदा तआला ने उस की फ़ितरत में ही में अपने लिए कुछ ना कुछ रखा हुआ है और अपने छुपे हुए और अत्यधिक ओझल कारणों से उसे अपने लिए बनाया हुआ है। पस जब इन्सान झूठी और नुमाइश वाली हाँ अस्थायी और दुख पर ख़त्म होने वाली मुहब्बतों से अलग हो जाता है फिर वो ख़ुदा ही के लिए हो जाता है और अपने आप कोई दूरी नहीं रहता और ख़ुदा की तरफ़ दौड़ा चला आता है। अत: इस يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ। में इसी की तरफ़ इशारा है। ख़ुदा तआला का आवाज़ देना यही है कि बीच का पर्दा उठ गया और दूरी नहीं रही। यह मुत्तक़ी का बहुत बड़ा दर्जा होता है जब वह सन्तोष और राहत पाता है। दूसरे स्थान पर क़ुरआन शरीफ़ ने इस सन्तोष का नाम फ़लाह (सफलता) और इस्तिक़ामत (दृढ़ता) भी रखा है और اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ। में इसी इस्तिक़ामत या इतमीनान या फ़लाह की तरफ़ सूक्ष्म इशारा है और ख़ुद मुस्तक़ीम का शब्द बता रहा है।

चमत्कार

यह सच्ची बात है कि ख़ुदा तआला ग़ैरमामूली तौर पर कोई काम नहीं करता। वास्तविक बात यह है कि वह पैदा करने के माध्यम करता है चाहे हम को उन कारणों का ज्ञान हो या ना हो ,अत: माध्यम ज़रूर होते हैं। इस लिए शक़्क़ुल-क़मर (चान्द का टुकड़े हो जाना) يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا (अल्अन्बिया :70) के चमत्कार भी माध्यमों से बाहर नहीं बल्कि वह भी कई अत्यधिक छुपे हुए माध्यमों के कारण हैं और सच्ची और हक़ीक़ी साईंस पर आधारित हैं। बुरा चाहने वाले और अन्धेरे फ़लसफ़ा को पसन्द करने वाले उसे नहीं समझ सकते। मुझे तो यह हैरत आती है कि जिस अवस्था में यह एक प्रमाणिक बात है कि ज्ञान के न होने से वस्तु का होना अनिवार्य नहीं आता तो अज्ञान फिलासफर क्यों इन माध्यमों के न जानने पर जो इन चमत्कार का कारण हैं असल चमत्कार के मना करने का साहस करता है। हाँ हमारा यह मानना है कि अल्लाह तआला अगर चाहे तो अपने किसी बंदे को इन छुपे हुए माध्यमों पर सूचित कर दे लेकिन यह कोई अनिवार्य बात नहीं देखो इन्सान अपने लिए जब घर बनाता है तो जहां और सब आराम के सामानों का ख़्याल रखता है सबसे पहले इस बात को भी समक्ष रख लेता है कि अंदर जाने और बाहर निकलने के लिए भी कोई दरवाज़ा बना ले। और अगर अधिक सामान हाथी , घोड़े , गाड़ियां भी पास हैं तो अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रत्येक चीज़ और सामान के निकलने और जाने के लिए दरवाज़ा बनाता है ना यह कि साँप की बाँबी की तरह एक छोटा सा सुराख़। इसी तरह पर अल्लाह तआला के कर्म अर्थात क़ानून क़ुदरत पर एक व्यापक और ध्यानपूर्वक नज़र करने से हम पता लगा सकते हैं कि उसने अपनी सृष्टि को पैदा कर के यह कभी नहीं चाहा कि वो उबूदीयत की सीमा बाहर निकल कर रबूबियत से सम्बन्धित ना हो। रबूबियत ने उबूदीयत को दूर करने का इरादा कभी नहीं किया। सच्चा फ़लसफ़ा यही है जो लोग उबूदीयत को कोई स्थायी इख़तियार वाली वस्तु समझते हैं वह सख़्त ग़लती पर हैं। ख़ुदा ने इस को ऐसा नहीं बनाया। हमारी मालूमात , ख़्यालात और अक़्लों का आपस में बराबर ना होना और हर बात पर पूरी और जैसा कि उस का हक है रोशनी

शेष पृष्ठ 12 पर

जलसा सालाना कादियान के बारे में एलान

दिसम्बर 2019 ई में आयोजित होने वाले जलसा सालाना कादियान के बारे में अख़बार बदर कादियान में ऐलान होता रहा है कि यह जलसा 125वां जलसा सालाना है। इस तारीख़ी जलसा के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कुछ विशेष प्रोग्रामों की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई है जिस की सूचना सर्कुलर के द्वारा जमाअतों को दी गई है। इसी दौरान' तारीख़ अहमदियत कादियान विभाग''की तहक़ीक़ की रोशनी में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल की सेवा में यह सूचना दी गई कि 2019 ई में आयोजित होने वाला जलसा सालाना 125 वां जलसा सालाना नहीं बल्कि126 वां जलसा सालाना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शफ़क़त करते हुए इस की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई और प्रोग्रामों को भी जारी रखने का आदेश फ़रमाया है। बदर के पाठक सूचित रहें।

(नाज़िर इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-18)

तरबियत बहुत अहम ज़िम्मेदारी है, सबसे पहले नमाज़ की तरफ़ ध्यान दें और इसके बाद माली क़ुर्बानी की तरफ़ ध्यान दें

इस के लिए आइन्दा एक दो हफ़्ता में नियमित एक मन्सूबा बनाएँ, जो भी मन्सूबा बनाएँ उस की एक नक़ल मुझे भी भिजवाएं

अगर आप अपनी आमला के मेम्बरों के पीछे पड़ जाएं और उन्हें नमाज़ बाजमाअत की महत्व का एहसास दिलाएँ तो इस से नमाज़ियों की संख्या में काफ़ी वृद्धि हो जाएगी।

सबसे पहले तो डैटा इकट्ठा करें कि कितने बच्चे, बच्चियां हैं जो यूनीवर्सिटीयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और कितने स्कूलों में हैं आपके पास यह सारी मालूमात होनी चाहिऐं कि उनके नाम , उनकी उम्र, उनकी शिक्षा , उनके भविष्य के प्लान क्या हैं, फिर हर जमाअत में एक कौंसलिंग का सिस्टम भी होना चाहिए, कम से कम बड़े शहरों की बड़ी बड़ी जमाअतों में यह सिस्टम ज़रूर मौजूद होना चाहिए, हमारे छात्रों को यह पता होना चाहिए कि उन्होंने आगे क्या करना है।

सदर लजना भी इस्लाही कमेटी का मैंबर होती है इसलिए आपकी पहुंच तो हर घर तक होनी चाहिए, जहां कहीं भी मसला का आरम्भ हो उसी वक़्त आपको रिपोर्ट मिलनी चाहिए।

इस के लिए आप प्लान बनाएँ कि लजना की तरफ़ से आप को मालूमात मिल जाएं, बजाय इसके कि मामला उस सीमा तक चला जाए जहां उसका हल ही मुम्किन ना हो।

उसे शुरू से ही देख लिया जाए या बजाय उस के कि मामला क़ज़ा या उमूरे आम्मा में जाए, इस्लाही कमेटी को पहले ही मामला को सुलझाने की कोशिश करनी चाहिए।

जो लोग अपनी असल आय पर चन्दा अदा नहीं करते उन के लिए कोई प्लान बनाएँ, अगर वह किसी वजह से असल आय पर चन्दा अदा नहीं कर सकते तो वे नियमित लिख कर छूट ले लें।

इस बारे में मुरब्बियों से भी मदद लें,लेकिन इस बात की विश्वसनीय कर लिया करें कि जिनको जमाअतों में भिजवाना है उन के अपने चन्दे असल आय के अनुसार हैं

नेशनल मजलिस आमला यू.ऐस.ए की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग और हुज़ूर अनवर की सुनहरी नसीहतें

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

04 नवम्बर2018 ई (दिनांक इतवार) की बाक़ी रिपोर्ट

निकाहों के ऐलान

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने कुछ निकाहों का ऐलान फ़रमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद , ताव्वुज़ और ख़ुत्बा निकाह की मसनून आयतों की तिलावत के बाद निम्नलिखित ग्यारह निकाहों का ऐलान फ़रमाया:

(1) प्रिया साइमा नवेद बिसरा पुत्री नवेद अहमद बसरा साहिब आफ़ वर्जीनिया का निकाह प्रिय तलहा रियाज़ (मुरब्बी सिलसिला नज़ारत इस्लाह इरशाद मर्कज़िया रब्वह) पुत्र आदरणीय रियाज़ अहमद साहिब बसरा आफ़ रब्वह के साथ तय पाया।

(2)प्रिया सूबिया अहमद पुत्री आदरणीय नदीम अहमद पाल साहिब आफ़ वर्जीना का निकाह प्रिय ख़ुर्रम वक़ार मलिक पुत्र आदरणीय वक़ार अहमद देश साहिब आफ़ फ़िलाडेल्फ़िया जमाअत के साथ तय पाया।

(3)प्रिया नबीला इनाम कौसर पुत्री आदरणीय इनामुल हक़ कौसर साहिब (अमीर जमाअत आस्ट्रेलिया)का निकाह प्रिय फ़राज़ अहमद पुत्र आदरणीय ताहिर अहमद खोखर साहिब के साथ तय पाया।

(4)प्रिया अज़ा मीर पुत्री आदरणीय नब्रास मीर साहिब आफ़ Willingboro का निकाह प्रिय शहरयार सरवर पुत्र आदरणीय मुहम्मद सरवर भट्टी साहिब के साथ तय पाया।

(5)प्रिया मैराल फ़ातिमा चौधरी पुत्री आदरणीय मुहम्मद मुबश्शिरुल्लाह साहिब आफ़ कैनेडा का निकाह प्रिय चौधरी नईम अहमद पुत्र आदरणीय नदीम असलम अरशद साहिब के साथ तय पाया।

(6)प्रिया हानिया मन्सूर पुत्री मन्सूर अहमद क़ुरैशी साहिब आफ़ डेट्रॉइट का निकाह प्रिय कामिल बासित सलाम पुत्र आदरणीय अब्दुस्सलाम मलिक साहिब के साथ तय पाया।

(7)प्रिया मर्यम सादिया सोसन देश पुत्री आदरणीय शाहिद सईद देश साहिब आफ़ वर्जीनिया का निकाह प्रिय शुऐब महमूद मलिक पुत्र आदरणीय ख़लील अहमद मलिक साहिब के साथ तय पाया।

(8)प्रिया मन्सूरा अहमद सिराजी पुत्री आदरणीय मुईनुद्दीन सिराजी साहिब आफ़ वाशिंगटन डी सी का निकाह प्रिय अब्दुल कबीर आदिल पुत्र आदरणीय अब्दुल क़ादिर शाजी साहिब के साथ तय पाया।

(9) प्रिया मर्यम तहसीन पुत्री तहसीन अहमद बाजवा साहिब आफ़ वर्जीनिया का निकाह प्रिय तसलीम अहमद मुज़फ़्फ़र पुत्र आदरणीय मुज़फ़्फ़र अहमद नजमी साहिब के साथ तय पाया।

(10)प्रिया सजील जमील पुत्री आदरणीय मुहम्मद जमील साहिब आफ़ मिलवाकी का निकाह प्रिय नफ़ीस अहमद पुत्र आदरणीय हफ़ीज़ अहमद साहिब के साथ तय पाया।

(11)प्रिया मदीहा शमीम देश पुत्री आदरणीय शमीम अहमद मलिक साहिब आफ़ नॉर्थ कैरोलीना का निकाह प्रिय महमूद काकी पुत्र सईद काकी साहिब (लुबनान) के साथ तय पाया।

निकाहों का ऐलान फ़रमाने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि दुआ कर लें। अल्लाह तआला यह सारे निकाह हर लिहाज़ से बरकतों वाले फ़रमाए। दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दोनों पक्षों को हाथ मिलाने के सौभाग्य से नवाज़ा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए।

नेशनल मजलिस आमला यू.ऐस.ए की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग

प्रोग्राम के अनुसार 6 बज कर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ मीटिंग रुम में तशरीफ़ लाए जहां नेशनल मजलिस आमला यू.ऐस.ए की हुज़ूर अनवर के साथ मीटिंग शुरू हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने मीटिंग का आरम्भ दुआ के साथ फ़रमाया।

*इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला करे कि इन लोगों के दिल इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को समझने के लिए भी खुल जाएं और उसे क़बूल करने वाले भी हों अफ़सोस की बात है कि दुनिया को इस्लाम की यह तस्वीर नहीं दिखाई जाती। ....आपकी मस्जिद में मुझे सुकून मिला है।
(इवलिन साहिबा)

आपकी जमाअत सिर्फ़ अहमदियों से ही नहीं बल्कि हर मज़हब से सम्बन्ध रखने वाले से अच्छा बरताव करती है(डेनी हारिकंक)

मुस्लमानों की हालत ऐसी है कि उनको तो अपने अक़ीदे और ईमान के बारे में इलम ही नहीं है

इन लोगों को आपके ख़लीफ़ा से इस्लाम सीखना चाहिए। मैंने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार इस तरह हिक्मत के साथ इस्लाम का पैग़ाम सुना है। (एक मेहमान)

आप लोग ही वास्तविक और असल मुस्लमान हैं।(एक मेहमान)

आलमी इन्साफ़ और भाईचारा का जो तसव्वुर इमाम जमाअत ने प्रस्तुत किया है दुनिया को इस की बहुत ज़रूरत है।
(माली से यूनेस्को के एंबेसेडर)

अगर दुनिया में वह इस्लाम स्थापित हो जो इमाम जमाअत अहमदिया पेश कर रहे हैं तो दुनिया की सब समस्याएं ख़त्म हो जाऐंगी।
(कैथोलिक लोगों की एसोसीएशन के सदर)

इस्लाम की यह शाख़ा अम्न पसंद शाख़ है। यह इस्लाम की वास्तिवक तस्वीर है। यह ऐसा इस्लाम है जिसमें इन्सानियत है प्यार है मुहब्बत है।.... ख़लीफ़ा की बातों से मुझे यक़ीन हो गया है कि यह ग़ैरमामूली जमाअत है। (एक मेहमान)

जमाअत अहमदिया तो दहश्तगर्दी और उग्रवाद के ख़िलाफ़ एक तलवार बन सकती है और अहम किरदार अदा कर सकती है।
(प्रैज़ीडैंट डिस्ट्रिक्ट कौंसल आफ़Kochersberg)

आज तक मैंने इस्लाम के ख़ुदा पर इतना गहरा और व्यापक तबसरा नहीं सुना जो ख़ुदा की तौहीद के कामिल दावे के साथ इसी ख़ुदा वाहिद को दुनिया के समस्त धर्मों, देशों और इन्सानी समाजों का पालने वाला ख़ुदा क़रार देता है। (कैथोलिक चर्च के एक पादरी)

चर्च बहुत सारे सवालों से आँखें चुराता है जबकि इमाम जमाअत अहमदिया ने हर मुम्किना सवाल और एतराज़ को लेकर कई ज़ावियों से इस के जवाब दिए और बे-ख़ौफ़ हो कर इस्लाम के दृष्टिकोण की वज़ाहत की इस से पहले जो परिचय हमें इस्लामी शिक्षाओं के बारे में था वह इस्लाम की ठीक तस्वीर पेश नहीं करता इसलिए आज की शाम मेरे लिए एक सकारात्मक और अमन वाला पैग़ाम लाई है। (Harald Boensel)

जिस अमन और सलामती का आपने पैग़ाम दिया है इस का स्त्रोत क़ुरआन था और अपने मौक़िफ़ का समर्थन क़ुरआन और इस्लाम के संस्थापक की आदेशों से की। यद्यपि यह नया विषय था और वर्तमान समय के तक़ाज़ों से मिलता जुलता था लेकिन ख़लीफ़ा ने अपने मौक़िफ़ को पुराने इस्लामी से समर्थन कर के साबित किया कि इस्लाम और क़ुरआन ने मज़हब की बुनियाद पहले दिन से ही इन्सानी हमदर्दी और अमन और सलामती की शिक्षा पर रखी है। (मैंबर आफ़ पार्लीमैंट)

इमाम जमाअत अहमदिया ने वर्तमान समय की नब्ज़ को बिलकुल सही तौर पर महसूस किया और चूँकि उनकी तशख़ीस दरुस्त है इसलिए उनके चुने गए ईलाज में सामाजिक बदअमनी का स्थायी ईलाज है। (मैंबर आफ़ पार्लीमैंट)

बहैसीयत एक मज़हबी सरबराह इमाम जमाअत अहमदिया ने आने वाली नस्ल इन्सानी के दर्द को जिस तरह समय से पहले वक़्त महसूस कर के आज की लीडरशिप को ख़बरदार किया है इस का मेरे दिल पर गहरा असर है और मेरी इच्छा है कि यह पैग़ाम आम हो। (Sabine Leidig)
जब भी कोई इस्लाम पर एतराज़ करेगा तो मैं ख़लीफ़ा वक़्त के इरशाद को पेश करते हुए इस्लाम का दिफ़ा करने की कोशिश करूँगी।
(वाइस मेयर)

यूरोप के दौरा सितम्बर, अक्तूबर 2019 ई के दौरान विभिन्न आयोजनों में शामिल होने वाले जमाअत के ग़ैर मेहमानों की प्रितिक्रयाओं का वर्णन।

एक बहुत बड़े आलिम ,मुत्तक़ी, नमाज़ रोज़ा के पाबन्द, तहज्जुद के नमाज़ पढ़ने वाले, दुआ करने वाले, ग़रीबों का ध्यान रखने वाले, सबर करने वाले , शुक्र करने वाले, मुख़लिस इन्सान और ख़िलाफ़त के सुल्तान नसीर मुकर्रम मौलवी महमूद अहमद साहिब मुल्लिग़ सिलसिला पाल घाट केरला इंडिया की वफ़ात पर उनका ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब)

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 1 नवम्बर 2019 ई. स्थान मस्जिद मुबारक , इस्लामाबाद, टेलफ़ोरड (सिरे यू के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ۔

पिछले दिनों में यूरोप के कुछ देशों के दौरे पर गया था जहां दो देशों हॉलैंड और फ्रांस के जलसा सालाना भी थे। इस के इलावा मस्जिदों के उद्घाटन और

ग़ैरों के साथ दूसरे प्रोग्राम भी होते रहे। फ्रांस में यूनेस्को UNESCO)की इमारत में आयोजन हुआ जिसकी इजाज़त वहां की इंतिज़ामीया ने दी थी और उनकी दावत पर की गई थी जिसमें इस्लामी शिक्षाए वर्णन करने और इलमी और साईंसी तरक़्क़ी में मुस्लमानों के किरदार को वर्णन करने की भी तौफ़ीक़ मिली। यूनेस्को UNESCO) यू एन UN)की एक संस्था है जो शिक्षा ,साईंस और कल्चर को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया गया है। इस के कामों में प्रैस की आज़ादी, ग़रीबी का ख़ात्मा और विरसे की हिफ़ाज़त इत्यादि के काम भी हैं। बहरहाल उनके उन्ही कामों के हवाले से इस्लाम की शिक्षा और पहले मुस्लमानों की इस बारे में सेवाओं और उनका हिस्सा और जमाअत अहमदिया के किरदार के बारे में उन्हें बताया। इसी तरह जर्मनी में बर्लिन में जो वहां की राजधानी है , वहां सियासतदानों और पढ़े लिखे लोगों को इस्लामी शिक्षा और यह बात जो यूरोपीयन लोगों के दिमाग़ों में है और जो धारणा स्थापित हो गई है, खासतौर जर्मनी और कुछ देशों में ज़्यादा है कि इस्लाम यूरोप के कल्चर और सिवीलाइज़ेशन (civilization)से मुताबिक़त नहीं रखता। इसलिए इस्लाम को ना यहां आना चाहिए, ना यहां आ सकता है और यह भी कि इस्लाम यूरोप के लिए ख़तरा है। इस बारे में इस्लामी शिक्षा की रोशनी में बताया और वहां कुछ बड़े पढ़े लिखे लोग, सियास्तदान और डिप्लोमैट्स इत्यादि भी थे। इन पर बड़ा सकारात्मक प्रितक्रिया हुई। उन्होंने इस का इज़हार किया। इसी तरह दूसरे आयोजनों में भी इस्लामी शिक्षा और इस्लाम का परिचय करवाने की तौफ़ीक़ अल्लाह तआला ने प्रदान फ़रमाई। अलहमदु लिल्लाह कि अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को देखने का हर जगह अवसर मिला। इस वक़्त में विभिन्न फंक्शनों पर कुछ ग़ैरों के जो प्रतिक्रियाात थे वे संक्षेप में वर्णन करूँगा जिससे ज़ाहिर होता है कि इन लोगों को इस्लाम की वास्तविक शिक्षा समझने और अपनी शंकाए दूर करने का हर जगह अवसर मिला।

हॉलैंड में जलसे के दूसरे दिन डच मेहमानों से भी सम्बोधित होने का अवसर मिला। 125 ग़ैरमुस्लिम डच मेहमान वहां शामिल हुए। नन सपीत (Nunspeet) जो उस वक़्त हमारा मर्कज़ है वहां के कौंसिलर ने अपनी प्रतिक्रिया वर्णन करते हुए कहा कि बहुत अरसा पहले मैं यहां आने को अर्थात जमाअत अहमदिया से सम्बन्ध रखने को पसंद भी नहीं करता था मगर वक़्त के साथ साथ सम्बन्ध अच्छे हो गए। और जब मैं वहां गया हूँ तो मेरे स्वागत के लिए भी वहां आए हुए थे। फिर कहते हैं पहले भी मैंने इमाम जमाअत अहमदिया को सुना , अब दोबारा सुनना चाहता था और यह सब बातें जो की हैं उनसे में बड़ा प्रभावित हूँ क्योंकि इस से लगता है कि जिस तरह एक गहरा आपसी रिश्ता हमारा आपस में हो गया है और आप लोग अर्थात वहां की जमाअत समाज का एक सक्रिय हिस्सा हैं और इस जलसा में शामिल हो के इस में बहुत मज़बूती पैदा हुई है

इसी तरह रोटर्डम (Rotterdam) वहां एक शहर है। वहां से आने वाले एक मेहमान हरमन मीटर (Herman Meeter)साहिब ने कहा कि जलसा पर आने से पहले मैं घबराया हुआ था कि इस जलसे पर मुस्लमान इकट्ठे हो रहे हैं, पता नहीं किया होगा? मगर यहां आकर बड़ी हैरत हुई कि अमन की बातें हो रही हैं और जो बात मुझे आपकी तक़रीर की अच्छी लगी वह यह थी कि बड़ी जुर्रत से बात की है। और फिर कहते हैं कि पोप उमूमी रंग में अमन की बात करता है मगर उसने अहमदी दोस्त को कहा कि आपके ख़लीफ़ा ने स्पष्ट रूप से ताकतवर क़ौमों को सम्बोधित कर के बात की है

फिर एक डच मियां बीवी थे जो इस में शामिल हुए वे कहते हैं कि जलसे का माहौल अजीब था। सब लोग ख़ुशअख़लाक़ थे। लगता था एक जन्नत जैसा माहौल है और फिर मेरी तक़रीर के बारे में उन्होंने कहा कि हम पर उस का बड़ा असर हुआ और अनुवादकों ने भी बहुत प्रभावित किया। बड़ा अच्छा अनुवाद साथ साथ हो रहा था। यह मित्र अनुवादकों पर भी depend करता है कि वे किस तरह वर्णन करते हैं इसलिए हमारे अनुवाद के विभाग को विभिन्न देशों में भी कोशिश यह करनी चाहिए, ऐम टी ए में तो करते ही हैं कि जब भी वहां फंक्शन और जलसे हों तो अनुवाद सही रंग में होने चाहिऐं।

एक मेहमान डैनी हारकंक (Dini Harkink) साहिब इस में शामिल हुए। कहते हैं कि मेरा शैक्षिक बैकग्रांऊड है। चार साल पहले मैं ने एक इदारे में डच ज़बान पढ़ानी शुरू की। यहां मेरी मुलाक़ात एक पाकिस्तानी फ़ैमिली से हुई और वह ज़बान सीखने आया करते थे। सम्बन्ध बढ़े और उन्हें मैंने हर तरह से सहयोग का यक़ीन दिलाया। हर हफ़्ते वे मेरे साथ कुछ वक़्त गुज़ारते और उनके बच्चे भी मुझे मिलते। इन बच्चों से भी मुझे जमाअत के बारे में ज्ञान हुआ और फिर कहते हैं कि अब मैं यहां आया हूँ तो मुझे बड़ा अच्छा महसूस हो रहा है और आपके ख़लीफ़ा भी अमन और आपसी भाईचारा की बातें करते हैं। कहते हैं कि मैं ख़ुद ईसाई हूँ और देख सकता हूँ कि आपकी जमाअत सिर्फ़ अहमदियों से ही नहीं बल्कि हर मज़हब से सम्बन्ध रखने वाले से अच्छा बर्ताव करती है। ख़ासकर एक मुस्लमान रहनुमा से यह बातें सुनना , उसने मुझे बड़ा प्रभावित किया क्योंकि आजकल इस्लाम के बारे में ग़लत धारणाँए मौजूद हैं। फिर यह कहते हैं कि आपने दुनिया में फैली बदअमनी का ज़िक्र किया है और अमन की स्थापना की ज़रूरत पर ज़ोर दिया है। हम ज़मीन पर एक दूसरे से मिलकर रहते हैं और हमें इस बारे में कोशिश करनी चाहिए कि हम सब मिलकर अमन की स्थापना करें।

फिर हॉलैंड में अलमेरे (Almere)शहर में उन्होंने वहां दूसरी मस्जिद बनाई है जो बाक़ायदा मस्जिद है, इस का उद्घाटन था। वहां अलमेरे चर्च के चेयरमैन हाईवोएतज़ल साहब आए हुए थे। कहते हैं कि आपकी जमाअत का पैग़ाम अमन का पैग़ाम है। आपके ख़लीफ़ा ने अमन और मज़हबी आज़ादी पर बहुत ही अच्छी तक़रीर की है। अलमेरे में पहले कैथोलिकस और प्रोटैस्टैंट मिलकर अमन के साथ रहते थे। अब उम्मीद है कि अहमदी भी हमारे साथ मिलकर अमन के साथ रहेंगे। उन्होंने कुछ तो चर्च के हवाले से भी बात करनी थी वर्ना यह उनका वहां के लोगों का प्राय इज़हार है कि जो भी अहमदी वहां रहते हैं अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बड़े मिल-जुल कर रहते हैं और बड़े अमन वाले हैं।

एक अरब मेहमान ज़करिया साहिब आए हुए थे। कहते हैं मुझे बड़ा अच्छा प्रोग्राम लगा और आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर जो थी वह मैंने सुनी। फिर यह कहने लगे कि अगर हम अमन चाहते हैं तो इस तक़रीर पर अमल करना चाहिए। फिर कहते हैं कि एक अरब होने के नाते यह भी मैं कहना चाहता हूँ कि आपके प्रोग्राम के शुरू में तिलावत क़ुरआन करीम की गई जो इन देशों में रहते हुए मेरे लिए एक अजीब बात थी और मुझे बड़ी अच्छी लगी।

फिर एक स्थानीय मेहमान थीं "देने के' साहिबा। कहती हैं यह फंक्शन बड़ा अच्छा आर्गेनाईज़ किया था और आपके ख़लीफ़ा की तक़रीर मैंने सुनी। बड़ी अच्छी थी। औरतों के लिए भी बड़ा अच्छा इंतिज़ाम था और पहली बार में आई हूँ और अब मैं दोबारा मस्जिद आऊँगी और जमाअत की औरतों से दोबारा मिलूंगी और अपना परिचय बढ़ाऊँगी।

एक और स्थानीय मेहमान थे कहते हैं कि यह पहला अवसर है कि मैं मुस्लमानों के इस किस्म के प्रोग्राम पर आ रहा हूँ। आने से पहले मेरे पड़ोसी ने कहा था कि बच कर रहना। मुस्लमानों का कुछ पता नहीं कि कब क्या कर दें लेकिन मुझे यहां आकर बहुत अच्छा लगा। आपकी जमाअत के लोगों ने हमारा शुरू से लेकर आख़िर तक बहुत ध्यान रखा।

फिर एक स्थानीय औरत हैं इवलिन साहिबा। कहती हैं कि अफ़सोस की बात है कि दुनिया को इस्लाम की यह तस्वीर नहीं दिखाई जाती। आपकी जमाअत के लोग बहुत मेहनती हैं और मेहमान नवाज़ हैं। मैंने आज इस मस्जिद को पहली बार देखा है मगर मैं आइन्दा भी यहां आना चाहती हूँ क्योंकि आपकी मस्जिद में मुझे सुकून मिला है।

इस के बाद फिर फ्रांस का दौरा था। उनके इस तरह के प्रतिक्रियाएं बेशुमार हैं लेकिन बहरहाल कुछ एक मैंने वर्णन किए। फ्रांस का जो दौरा था वहां जलसा था और वहां भी इसी तरह ग़ैर अहमदी, ग़ैर मुस्लिम मेहमानों के साथ बैठक थी जिस में 75 के क़रीब मेहमान आए हुए थे वहां एक मेहमान औरत जो पेशे के एतबार से अंथरापूलोजिस्ट् (Anthropologist) हैं। कहती हैं कि जब ख़लीफ़ा ने यह बात की कि वह फ्रांस में जो विभिन्न हमले हुए हैं उनकी निन्दा करते हैं तो उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि इस्लाम का ऐसे हमलों से कोई सम्बन्ध नहीं है। फिर कहती हैं कि इमाम जमाअत अहमदिया ने इस्लाम की जो वास्तविक तस्वीर पेश की है इस से मालूम होता है कि मुस्लमान आसानी से मग़रिबी दुनिया में इंटीग्रेट (Integrate) हो सकते हैं और कहने लगीं कि जो कहते हैं कि मग़रिबी दुनिया में इस्लाम के लिए कोई जगह नहीं है ,मुस्लमान वहां मिलकर नहीं रह सकते वे ग़लत कहते हैं। ऐसे लोगों को आज की तक़रीर सुननी चाहिए थी

फिर एक ग़ैर अहमदी मुर्तज़ा साहिब थे जिनका सम्बन्ध ईरान से था। कहते हैं कि उन्हें आज पहली बार अहमदिया जमाअत और ख़लीफ़तुल मसीह के स्टेटस (status)का ज्ञान हुआ । लोग दुनिया में इस्लाम के ख़िलाफ़ बहुत प्रोपेगंडा करते हैं, आपके ख़लीफ़ा ने आज इन सब का ज़बरदस्त जवाब दिया है। मुस्लमानों की हालत ऐसी है कि उनको तो अपने अक़ीदे और ईमान के बारे में इलम ही नहीं है।

इन लोगों को आपके ख़लीफ़ा से इस्लाम सीखना चाहिए। और असल बात तो यह है कि ज़माने के इमाम मसीह मौऊद और महदी माहूद से जुड़ कर ही इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का पता लगता है और जब तक इन मुस्लमानों को इस बात की समझ नहीं होगी कि उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आना है तब तक सही इस्लाम का, वास्तविक इस्लाम का पता लग भी नहीं सकता। बहरहाल यह कहते हैं कि ख़लीफ़ा ने आज स्पष्ट कर दिया है कि जिहाद असल में क्या है और किस तरह उस की ग़लत व्याख्याएं की जा रही हैं। ख़लीफ़ा ने इस्लाम के आरम्भिक दौर की घटनाएं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जो घटनाएं प्रस्तुत की हैं उनसे साबित होता है कि इस्लाम एक अम्न पसंद मज़हब है। मैंने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार इस तरह हिक्मत के साथ इस्लाम का पैग़ाम सुना है।

फिर मराक़श से सम्बन्ध रखने वाले एक ग़ैर अहमदी मेहमान सुफ़ियान साहिब कहते हैं कि मुझे आज के ख़िताब से इस बात का अंदाज़ा हुआ कि आप लोग ही वास्तविक और असल मुस्लमान हैं और जो लोग कहते हैं कि आप मुस्लमान नहीं हैं वे बिलकुल ग़लत कहते हैं। मौलवियों ने जो मुझे बचपन से अहमदियों के बारे में सिखाया था वह सब झूट था लेकिन फ्रांस में इस्लाम से और मुस्लमानों से लोग डरते हैं। हमें पता नहीं था कि हम किस तरह उस का दिफ़ा करें। किस तरह लोगों का डर और ख़ौफ़ दूर करें। आज कहते हैं कि आपके ख़लीफ़ा ने बहुत अच्छे तरीक़े से इस्लाम का दिफ़ा किया है और यह भी जैसा कि मैं ने कहा कि वास्तविक इस्लामी शिक्षा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने से ही पता लगती है।

एक ईसाई मेहमान थे जैकब (Jacob)साहिब। कहते हैं ऐसे प्रोग्रामों की दुनिया में बहुत ज़रूरत है। आपके ख़लीफ़ा विभिन्न क़ौमों और धर्मों में जो आपस की दूरी हैं उनको कम कर रहे हैं। उन्होंने हमें ये समझाया है कि जो दहशतगर्द हैं उनके सयासी उद्देश्य हैं। मज़हब एक अच्छी चीज़ है। मज़हब से डरना नहीं चाहिए। ख़लीफ़ा ने बार-बार आज़ादी की बात की। यह फ्रांस के लोगों के लिए एक नई बात है। फ्रांस के लोगों में इस्लाम के बारे में बिलकुल और सोच है।

फिर एक मेहमान मेक्सेन आन फिरे (Maxine Onfray)जो थिंक टैंक में काम करते हैं, कहने लगे कि आज मेरी ज़िन्दगी का एक बहुत प्यारा दिन है जिसमें आपके ख़लीफ़ा को सीधा मैंने सुना और उन्होंने बिलकुल सही कहा है कि इस वक़्त हम एक ऐसे अंधेरे दूर से गुज़र रहे हैं जिसमें नफ़रत पाई जाती है लेकिन साथ हमें यह भी समझा दिया कि यह सब कुछ मज़हब की वजह से नहीं है और लोगों को इस्लाम से डरने की ज़रूरत नहीं है। ख़लीफ़ा ने जो यह कहा है कि मज़हब को शिद्दत-पसंद लोगों ने हाईजैक कर लिया है और उसे अपने सयासी उद्देश्य के लिए इस्तिमाल कर रहे हैं। यह बिलकुल दरुस्त है। मैं इस से सहमत हूँ। और फिर कहते हैं कि उन्होंने इस्लामी शिक्षा की दृष्टि से हमें समझाया कि हम आइन्दा अपनी नस्लों के लिए किस तरह दुनिया को अच्छा छोड़ के जा सकते हैं और कहते हैं कि इस ख़िताब को प्रकाशित होना चाहिए और हम सबको मिलना चाहिए। यह थिंक टैंक के एक मैंबर हैं उनकी समीक्षा है।

फिर 8 अक्तूबर को यूनेस्को (UNESCO)मैं जैसा कि मैंने ज़िक्र किया वहां आयोजन थी। इस आयोजन में 91 मेहमान सम्मलित हुए जिनमें यूनेस्को में माली के एंबेसेडर, फ्रांस की वज़ारत ख़ारजा और दाख़िला के हुक्काम , मज़हबी उमूर के मुशीर, फ्रांस की मज़हबी उमूर की जो वज़ारत है इस की मुशीर, धर्म के विभाग के डायरेक्टर,NATO मैमोरियल के प्रैज़ीडैंट, मैंबर पार्लीमैंट , कौंसिलरज़, मेयरज़ और विभिन्न हुकूमती संस्थायों से सम्बन्ध रखने वाले लोग और डायरैक्टर्ज़ इत्यादि शामिल थे

माली से यूनेस्को के एंबेसेडर उम्र कविता साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा कि इमाम जमाअत अमन फैला रहे हैं। मैं आपके अमन के पैग़ाम की वजह से मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूँ। यूनेस्को एक ऐसी आईडीयल जगह है जहां अमन की बात हो सकती है और फिर उन्होंने अपने बाक़ी भावनाओं का भी इज़हार किया कि किस तरह इस तक़रीर से, ख़िताब से हमें बहुत सारी बातें पता लगीं और फिर कहते हैं कि यही वह चीज़ है जिसकी उम्मत मुस्लिमा को भी ज़रूरत है। माली के रहने वाले ख़ुद मुस्लमान नहीं हैं। कहते हैं यही वह चीज़ है जिसकी उम्मत मुस्लिमा को भी ज़रूरत है। आलमी इन्साफ़ और भाईचारा की जो धारणा इमाम जमाअत ने प्रस्तुत की है दुनिया को इस की बहुत अधिक ज़रूरत है।

फिर नेटो मैमोरियल के सदर मिस्टर बरेंटन (Mr Brenton)ने कहा कि इस में शामिल हो कर अपनी ख़ुशी का इज़हार किया। इस बात का इज़हार किया कि वह शामिल हुए। फिर कहते हैं कि यह कान्फ्रैंस अहम और तारीख़ी थी इस से अमन ,भाईचारा और उखुवत स्थापित हो सकता है। मेरी इच्छा है कि ज़्यादा से ज़्यादा लोग जमाअत अहमदिया के इमाम के पैग़ाम को सुनें और फिर कहते हैं कि यह वास्तविक इस्लाम की बात करते हैं जो अमन वाली और बर्दाश्त की शिक्षा देने वाला है। यह पैग़ाम शिद्दत पसंदों के कर्म से बिलकुल विभिन्न है। इमाम जमाअत उस अमन के पैग़ाम को बढ़ावा देने के लिए बहुत कोशिश कर रहे हैं। फिर कहते हैं कि यह एक ज़रूरी काम है , अमन के काम को बढ़ावा देना और हम भी उनकी मदद करने के लिए तैयार हैं। और फिर कहते हैं कि हम में से हर एक को अमन स्थापित करने की कोशिश करनी चाहिए। यह काम हर सतह पर करना चाहिए और इस के लिए अपना व्यावहारिक नमूना पेश करना चाहिए

फिर फ्रांस में माली से सम्बन्ध रखने वाले कैथोलिक लोगों की एसोसीएशन के सदर दायलो (Diallo)साहिब भी इस प्रोग्राम में शामिल थे। कहते हैं कि मैं पहले से अहमदियों के बारे में जानता था। समस्त धर्मों को यह पैग़ाम दूसरों तक पहुंचाना चाहिए जो आज हमें मिला और यह तक़रीर सुनकर मुझे लगा कि यह इतना प्यारा पैग़ाम है और इस को सुनने के बाद मेरे दिल में इस की इतनी इच्छा पैदा हुई कि मैं इस्लाम की तरक़्क़ी के लिए ख़ुद दुआ करूँ। यह कैथोलिक हैं। फिर कहते हैं कि अगर दुनिया में वह इस्लाम स्थापित हो जो इमाम जमाअत अहमदिया प्रस्तुत कर रहे हैं तो दुनिया की सब समस्याएं ख़त्म हो जाऐंगे। जब दूसरों की भावनाओं का सम्मान होगा तो हर जगह अमन स्थापित होगा। आपसी सम्मान की बड़ी ज़रूरत है। हम में से हर एक अपने अपने धर्म पर स्थापित है लेकिन हमारा एक साझा अक़ीदा है और वह अल्लाह की ज़ात है।

फिर एक मेहमान बर्नरड (Bernard)साहिब कहते हैं कि हम टीवी पर इस्लाम के बारे में जो प्रोपेगंडा सुनते थे आज इस से बिलकुल विभिन्न इस्लाम की शिक्षा पेश की गई है और यही वास्तविक इस्लाम है। कहते हैं कि मैंने आज आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में ज्ञान हासिल किया है कि किस तरह मदीने में बहुत उच्च समाज स्थापित किया। मुझे आज पहली बार पता चला है कि इस्लाम ने ज्ञान के मैदान में कितना बड़ा हिस्सा लिया और दुनिया को इलम दिया है

फिर फ्रांस की एक इन्सानी हुक़ूक़ की फ़ैडरेशन के मैंबर हैं जो इस प्रोग्राम में शामिल थे। कहते हैं कि यह तक़रीर बहुत अच्छी और बहुत गहरी थी। बड़ी तफ़सील से इलम की ज़रूरत और इलम के फ़रोग़ के लिए किए जाने वाले कोशिशों का ज़िक्र किया। आपने इलम की तारीख़ में इस्लाम की ख़िदमतें भी गँवाई हैं। यह बहुत दिलचस्प मालूमात थीं।

फिर सिटी कौंसल के एक मैंबर प्रोग्राम में शामिल थे। यह कहते हैं कि मैं कौंसल में विभिन्न नस्लों के आपसी मतभेद के ख़िलाफ़ काम करने वाले विभाग का इंचार्ज हूँ और फिर कहते हैं कि ख़ासकर ने जो तक़रीर, जो बातें मैंने आज सुनीं इस में खासतौर पर आपने जो औरतों को इलम के बराबर अवसर प्रदान करने की बात की है और फिर विश्वव्यापि भाईचारा की बात की है यह बहुत ज़रूरी है। फिर अफ़्रीक़ा के पिछड़े इलाक़े में शिक्षा और सेहत के हवाले से शुरू किए जानेवाले जमाअत के

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

प्रोजेक्ट्स का ज़िक्र किया है। कहते हैं कि आम तौर पर जब फ्रांस या अन्य देशों में इस्लाम की बात होती है तो विभिन्न शंकाओं का ज़िक्र होता है। समाज में एक इस्लाम का भय है, ऐसे में इस्लाम के बारे में सकारात्मक बातें सुनने को मिली हैं। मुझे इस बात से बड़ी ख़ुशी हुई है। कहते हैं कि मेरी इच्छा थी कि मैं यहां आऊँ और देखूं कि आपकी जमाअत क्या है और कैसे काम करती है और आपके बारे में और अधिक इलम हासिल करूँ। अत: आज मेरी यह इच्छा हुई।

फिर एक और मेहमान इलैगज़ेंडर (Alexander)साहिब हैं कहते हैं कि ख़लीफ़ा ने अमन का पैग़ाम दिया और यह ख़िताब सच्चाई पर आधारित था। आप ने बड़ी खुल कर और स्पष्ट बात की। मुझे लगता है कि अहमदिया जमाअत ने ग़ुलामी के विषय को वाज़िह किया है। यह पैग़ाम बहुत शानदार है। मुस्लमानों में से अहमदियों ने यह पैग़ाम पेश किया है जो एक छोटी सी जमाअत है।

फिर एक औरत जर्नलिस्ट थीं। कहती हैं कि तक़रीर सुनी, बड़ी अच्छी तक़रीर थी। खासतौर पर यह सुनकर हैरानी हुई कि किस हद तक इस्लाम ने दुनिया में शिक्षा ती तरक़्क़ी की हुई है। इस में मुस्लमानों का कितना बड़ा किरदार है और इस की मिसालें भी आपने अपनी तक़रीर में दें और क़ुरआन की भी मिसाल दी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भी मिसालें दें कि किस तरह उन्होंने एक अम्न पसंद समाज की स्थापना का फ़रमाया। कहती हैं कि आज मैंने यहां बहुत कुछ सीखा है।

फिर एक मेहमान मिस्टर बरेज़ीवोली (Mr Bresiouu Willy)साहिब हैं। एक चैरिटी में काम करने वाले हैं। कहते हैं कि बड़ा अहम आयोजन था। बड़ा उम्दा पैग़ाम था। एक तारीख़ी पैग़ाम था। एक ऐसा पैग़ाम था जिसको सारी दुनिया को सुनना चाहिए। इस ख़िताब से मेरा ज्ञान बढ़ा है और मुझे अमन की असल हक़ीक़त और एहमीयत का अंदाज़ा हुआ है।

फिर स्टरास बर्ग में मस्जिद का उद्घघाटन था। जर्मनी के बॉर्डर पर स्टरास बर्ग फ्रांस का एक दूसरा शहर है वहां लगभग 191 मेहमानों ने शिरकत की। इन मेहमानों में इलाक़ा की पार्लीमैंट की मैंबर थीं। पाँच इलाक़ों के मेयरज़ शामिल हुए। विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधि थे। विभिन्न एसोसीएशनज़ के सदर थे। विभिन्न ज़िन्दगी के विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल थे और इर्द-गिर्द के जो छोटे छोटे क़स्बे हैं उनके लोग भी खासतौर पर आए हुए थे क्योंकि उन लोगों में इस्लाम के ख़िलाफ़ काफ़ी शंकाएं बल्कि नफ़रत पाई जाती है और जब आए हैं तो उनकी प्रतिक्रिया बिलकुल थे।

मार्टिन (Martine)साहिबा मैंबर आफ़ फ्रैंच पार्लीमैंट हैं। उन्होंने कहा कि मैं बहुत ख़ुश हूँ कि आपने एक भरपूर पैग़ाम दिया है। एक अमन का पैग़ाम, भाई चारे का पैग़ाम और यह पैग़ाम सारी दुनिया के लिए है। फिर कहती हैं कि अहमदी बहुत सक्रिय हैं। ये कुछ कर के दिखाना चाहते हैं और उनके कर्मों से उनका माटो झलक रहा है। फिर कहती हैं कि मैं दोबारा किसी वक़्त आऊँगी जब कि यहां कम लोग होंगे और आप लोगों से बैठ कर तसल्ली से बात करने का अवसर मिलेगा। फिर में आपकी इक़दार बेहतर तौर पर जान सकूँगी और यह हमारे समाज के लिए उस की बेहतरी के लिए बहुत ज़रूरी है। फिर कहती हैं कि आपके ख़लीफ़ा ने अमन की बात की है, बर्दाश्त की बात की है। फ्रांस के लिए, फ्रांस के शहरियों के लिए यह पैग़ाम बहुत अहम है। फ्रैंच लोगों को यह जानने की ज़रूरत है कि जो इस्लाम हम मीडिया से जानते हैं वो विभिन्न है। हमें इस असल और वास्तविक इस्लाम को जानने की ज़रूरत है।

फिर वहां की कौंसल आफ़ बीरेन (Barin)में एक विभाग के नायब सदर इस आयोजन में शामिल हुए थे। कहते हैं कि हमारे इलाक़े में तिब्बत से सम्बन्ध रखने वाले बुध मत का यूरोपीयन सैंटर है। मैं धर्मों के बारे में जानता हूँ। ईसाईयत, यहोदीत, जूडो क्रिस्चन, बुध मत इत्यादि की ख़िदमतों से अच्छी तरह आगाह हूँ लेकिन जो तक़रीर आज मैंने सुनी है इस से बड़ा प्रभावित हुआ क्योंकि एक तो आपके शब्द थे और एक आपका नज़रिया था और वह यह था कि 'मुहब्बत सब के लिए, नफ़रत किसी से नहीं'। आपने इस्लाम की भरपूर तस्वीर पेश की है। आजकल जैसा कि इस्लाम को समझा जाता है आपने उस के विपरीत इस्लाम की वास्तविक तस्वीर पेश की है । आपके शब्द और आपके नज़रिए में बहुत समानता है। आप हर एक के लिए अपने दरवाज़े खुले रखने पर यक़ीन रखते हैं और आज की तक़रीब से मैंने यही सीखा है और यही अमन का रास्ती है।

फिर स्टरास बर्ग की मस्जिद के उद्घाटन पर यूबा जिया (Eubajia)साहिब और उनके साथ एक औरत थीं शायद उनकी बीवी थीं। वह कहते हैं कि हमने आज के आयोजन के लिए प्राप्त होने वाली दावत क़बूल करने से पहले इंटरनैट पर आपकी जमाअत के बारे में मालूमात हासिल कीं। जमाअत अहमदिया की कोशिशों के बारे में जान कर हमने दिली ख़ुशी से दावत स्वीकार की और सबसे ज़्यादा हमें इस बात की ख़ुशी हुई है कि यहां विश्व व्यापी मुफ़ाहमत को बढ़ावा दिया गया है और तक़रीर में भी हुकूक़ इंसानियत और विशेष रूप से पड़ोसियों के हुक़ूक़ पर इस्लामी शिक्षाए पेश की हैं।

अत: हमारे आयोजनों में जब लोग आते हैं तो इंटरनैट के माध्यम से जमाअत की मालूमात भी हासिल करते हैं और वहीं उनको फिर इस्लाम की वास्तविक शिक्षा के बारे में बहुत कुछ पता भी लग जाता है।

एक मेहमान ने कहा कि मेरे लिए अपनी भावनाएं वर्णन करना मुम्किन नहीं है। मुझे इस्लाम की इस संस्था का पहले बिलकुल इलम नहीं था। गली में मुझे कुछ लोग मिले जिन्होंने इस तक़रीब में आने का कहा। मैंने इंटरनैट से कुछ मालूमात लीं और यहां आने का फ़ैसला किया और क्या ही अच्छा फ़ैसला था। जो आज मैंने यहां सुना है में इस की तारीफ़ किए बिना नहीं रह सकता। इस्लाम की यह शाख़ अम्न पसंद शाख़ है। यह इस्लाम की असल तस्वीर है। यह ऐसा इस्लाम है जिसमें इन्सानियत है, प्यार है, मुहब्बत है। अब मुझे मालूम हुआ है कि जो इस्लाम हमें बताया जाता है वह इस्लाम नहीं बल्कि कोई और वस्तु है। मुझे अब मालूम हुआ है कि इस्लाम की अख़लाक़ी शिक्षा ईसाईयत जैसी है। यह तो यह लोग मजबूरन कहते हैं वर्ना बहुत सारी प्राईवेट मज्लिसों में उन्होंने यह भी इज़हार किया कि ईसाईयत की शिक्षा से बहुत बढ़कर है। फिर कहते हैं कि ख़लीफ़ा की बातों से मुझे यक़ीन हो गया है कि यह ग़ैरमामूली जमाअत है।

फिर एक साहिब हैं जस्टन (Justin)जो शहर की डिस्ट्रिक्ट कौंसल के प्रैज़ीडैंट हैं। कहते हैं कि शुरू में जब मेरे ज्ञान में यह बात आई कि यहां मस्जिद बनने वाली है तो मेरे बहुत सी शंकाए थी लेकिन जब मैंने आप लोगों का यह नारा सुना कि 'मुहब्बत सबसे ,नफ़रत किसी नहीं' तो मुझे यह ख़्याल हुआ कि आज की दुनिया में किस तरह हो सकता है कि कोई इतना प्यार से भरा हुआ नारा लगाए और उसे क़बूल ना किया जाए। जमाअत अहमदिया तो दहश्तगर्दी और शिद्दत पसंदी के ख़िलाफ़ एक तलवार बन सकती है और अहम भूमिका अदा कर सकती है। फ्रांस में अभी तक लोग जमाअत अहमदिया को इतना तो नहीं जानते लेकिन शिद्दत पसंदी और मौजूदा मुश्किलात के ख़िलाफ़ अहमिदयत के दृष्टिकोण को ही देखना चाहिए और उनके माध्यम से जानना चाहिए। इसलिए आप लोगों को बहुत ज़्यादा काम करना चाहिए।

फिर लोक गेनज़क (Luc Ginzc) साहिब हैं जो एक शहर के मेयर हैं। कहते हैं मैं पहली बार मस्जिद में आया हूँ। अगर मस्जिद में आना यह चीज़ है जो मैंने आज देखी तो मैं रोज़ मस्जिद में आऊँगा। मुझे मस्जिद में आना इतना अच्छा लगा और सुकून मिला है कि मैं इस का वर्णन नहीं कर सकता।

फिर वहां से14 अक्तूबर को जर्मनी गए हैं। वहां मस्जिद वेज़ बादिन का उद्घाटन था और वहां का एक मशहूर हाल है जहां उद्घाटन का आयोजन हुआ क्योंकि

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

मस्जिद के अपने सेहन में जगह नहीं थी। इस तक़रीब में जो मेहमान शामिल हुए उनकी संख्या 370 थी और लार्ड मेयर इत्यादि तो वहां आए थे लेकिन वहां सुबाई असैंबली के मैंबर भी थे और विभिन्न वज़ारतों के हुकूमती प्रतिनिधि भी थे। विभिन्न हुकूमती विभागों के डायरैक्टर्ज़ थे, पुलिस अफ़्सर थे, चर्च के पादरी थे, प्रोफ़ैसर ज़थे, डाक्टर, वुकला इत्यादि विभिन्न वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले लोग थे

कैथोलिक चर्च के एक पादरी ने कहा कि इस तक़रीर में जो आपने की है समस्त दृष्टिकोण वर्णन कर दिए हैं और मैं उनसे कामिल सहमत रखता हूँ। दूसरों से मुहब्बत करना और ख़ुदा के हुक़ूक़ अदा करना यह सब बातें मेरी शिक्षा में भी हैं। इसी तरह कहते हैं कि आज तक मैंने इस्लाम के ख़ुदा पर इतना गहरा और व्यापक तबसरा नहीं सुना जो ख़ुदा की वहदानीयत के कामिल दावे के साथ इसी ख़ुदाए वाहिद को दुनिया के तमाम मज़ाहिब, देशों और इन्सानी मुआशरों का पालने वाला ख़ुदा क़रार देता है और अपनी ख़बर-गेरी और ख़ैर पहुंचाने के लिए ज़मीन में अपने, बेगाने और मज़हब तथा मिल्लत का अन्तर नहीं रखता। फिर कहते हैं काश दुनिया के समस्त लीडर अगर अमन के बारे में इस तरह की तक़रीर करें तो बड़ा अच्छा हो। फिर कहते हैं कि मैं जमाअत अहमदिया से अब समपर्क में रहना चाहता हूँ और मस्जिद देखने भी ज़रूर आऊँगा। उन्होंने ख़ुद यह एक तसव्वुर स्थापित कर लिया कि इस्लाम का ख़ुदा कोई और है और ईसाईयत का ख़ुदा कोई और है और जब उनको सही हक़ीक़त बताई जाए तो बहरहाल मानने पर मजबूर हैं।

फिर माइनज़ (Mainz) शहर से एक चर्च के नुमाइंदे शामिल हुए। कहते हैं कि पड़ोसी के हुक़ूक़ के बारे में आपने जो कहा, तफ़सील के साथ जो इस्लामी शिक्षा प्रस्तुत की है यह मेरे लिए बिलकुल नई और दिलचस्प थी और किसी भी मज़हबी शख़्सियत से इस हद तक पड़ोसी के हक़ की ताकीद मैंने पहली बार सुनी है। फिर एक ला फ़र्म से आए हुए वकील थे। कहते हैं कि जमाअत अहमदिया की सोच की वुसअत पर तो मैं और मेरा दफ़्तर पहले भी हैरत वाले होते थे लेकिन आज पड़ोसी के हुक़ूक़ जो आपने वर्णन किए हैं और पड़ोसी की तारीफ़ में जो वुसअत वर्णन की है तो शहर का शहर ही इस वुसअत में समा गया है इस से हमारी हैरत में और अधिक वृद्धि हुई है। इस तरह शहर वालो के लिए जमाअत अहमदिया की हमदर्दी और ख़बर-गैरी का क्षेत्र और वसीअ हो गया है।

फिर एक मेहमान सोज़ीन (Susanne)साहिबा जो टीचर हैं कहती हैं कि जो बात मुझे इस ख़िताब में सबसे अच्छी लगी वह यह थी कि हम सब इन्सानों का ख़ालिक़ एक ही है और हम सब एक ही ख़ुदा पर ईमान लाते हैं। यह बात हम सबको याद रखनी चाहिए।

फिर एक औरत कोनी (Conny) साहिबा हैं जिनका सम्बन्ध डई गिरवन (Die Gr□ne)पार्टी से है जो शहर वेज़ बादिन के पार्लीमैंट में इंटीग्रेशन विभाग (integration)के लिए काम करती हैं। कहती हैं कि यह ख़िताब निहायत हौसला बढ़ाना वाला महसूस हुआ। एक बात जो मेरे लिए भी निहायत अहम है और मुझे कभी भोलेगी नहीं वह यह थी कि समस्त अहमदियों को अपने माहौल के लिए मुफ़ीद वजूद बनना चाहिए। इस बात पर सिर्फ अहमदियों को ही नहीं बल्कि सबको अमल करना चाहिए। अगर समस्त मुस्लमान फ़िरक़े आप अहमदियों की तरह ओपन माइंडिड (open minded)होते तो हमारा आपस में मिल-जुल कर रहना बहुत आसान हो जाता। यहां यह भी स्पष्च कर दूं कि बेशक हम मिलजुल कर तो रहते हैं लेकिन कुछ लोग कई बार मुदाहनत का इज़हार कर देते हैं। इसलिए अपनी शिक्षा के अंदर रहते हुए आप बात करें और एंटी ग्रेशन के लिए इसी अख़लाक़ की सीमा में रहते हुए भी आराम से शिक्षा बताई जा सकती है। इसलिए डरने की ज़रूरत नहीं है। इंटीग्रेशन का मतलब यह है कि उच्च अख़लाक़ का मुज़ाहरा करते हुए इस्लाम की शिक्षा को स्पशष्ट किया जाए।

बहरहाल अब अगले मेहमान का ज़िक्र करता हूँ। यह स्कूल में उस्ताद हैं। कहते हैं कि मुझे यहां पहली बार जमाअत का परिचय हुआ और बड़ा अच्छा इंतिज़ाम था। यह बात मुझे बड़ी अहम लगी है जो ख़लीफ़ा ने वर्णन की है कि भाईचारा पर ज़ोर दिया जाए और दूसरे धर्मों के लोगों और इसी तरह तमाम इन्सानों के साथ प्यार से पेश आया जाए। यह आजकल के समाज में बहुत ही कम हो गया है और दूसरे धर्म इस बात को भूलते जा रहे हैं लेकिन आप लोग इस को एहमीयत देते हैं। अब मैंने आप लोगों की मस्जिद में भी ज़रूर जाना है और मेरे ज़हन में जो मेरे सारे सवाल पैदा हो रहे हैं उनको हल करवाना है

एक स्थानीय हस्पताल के डाक्टर हैं। कहते हैं कि मज़हबी हलक़ों से अगर ऐसी शिक्षा मिले जिसका इज़हार आज इमाम जमाअत अहमदिया की तक़रीर से हुआ है तो समाज में इन्सानी क़दरों का सम्मान स्थापित हो सकता है। चर्च को भी ऐसा दृष्टिकोण आम करना होगा। अभी चर्च बहुत से सवालों से आँखें चुराता है। यह ईसाई हैं और कहते हैं कि अभी चर्च बहुत से सवालों से आँखें चुराता है जब कि इमाम जमाअत अहमदिया ने हर संभावित सवाल और आरोपों को लेकर कई दृष्टिकों से इस के उत्तर दिए और बे-ख़ौफ़ हो कर इस्लाम के दृष्टिकोण की स्पष्ट किया है। फिर कहते हैं ख़ुशी की बात यह है कि उनकी हर वज़ाहत और व्याख्या इन्सानी समाज को अमन ,सुलह और मुहब्बत की तरफ़ ले जाने वाली है।

फिर एक मेहमान औरत हैं हाईक बुराडर (Heike Brader) साहिबा। कहती हैं कि आपने बताया कि ख़ुदा सारी दुनिया का रब है । रबुल आलमीन है और यह ख़ुदा का ऐसा वसीअ विचारधारा है जो मेरे लिए बहुत दिलचस्पी का कारण था और हैरत-अंगेज़ बात यह है कि ख़ुदा एक और वाहिद होते हुए भी सब धर्मों और सारे इन्सानों और क़ौमों का ख़ुदा है और सबको बिना अन्तर के पालता है। हर ग़ौर करने वाले और अक़लमंद को तौहीद को माने बिना गुज़ारा ही नहीं है और यह उनके लिए ज़रूरी है कि एक ख़ुदा को मानें जो सब ताक़तों का मालिक है और हर अहमदी की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि यह तौहीद का जो पैग़ाम है हर एक तक पहुंचाएं।

एक औरत बाऊर (Bauer) साहिबा कहती हैं कि मेरे लिए एक बहुत बड़े सम्मान का कारण है कि में एक ऐसी बरकत वाली महफ़िल में शामिल हो सकी। कुछ शंकाए और ग़लत-फ़हमियाँ जो मेरे ज़हन में थीं वह इमाम जमाअत अहमदिया ने अपने स्पष्ट मौक़िफ़ और इस्लामी शिक्षा की वास्तविक व्याख्या और तफ़सील से दूर कर दी हैं। अब मेरे लिए बहुत कुछ स्पष्ट हो चुका है।

एक मेहमान कहते हैं कि अमन स्थापित करने के लिए सबसे अहम बात जो वर्णन की गई वह यह है कि दूसरों की इक़दार को समक्ष रखा जाना चाहिए। मुझे इस बात का इलम तो था कि इस्लाम में विभिन्न फ़िर्क़े होते हैं लेकिन इस जमाअत का बहरहाल नहीं पता था जो इतनी अम्न पसंद हो।

फिर एक मेहमान मुख़तारी (Muktari)साहिब हैं जो कि वेज़ बादिन की पुलिस में काम करते हैं। कहते हैं कि आज का प्रोग्राम यह स्पष्ट कर रहा था कि मुस्लमान अपनी एक और तस्वीर भी दिखाना चाहते हैं कि इस्लाम हक़ीक़त में एक अम्न पसंद मज़हब है। ख़लीफ़ा ने यह जो वर्णन किया कि अफ़्रीक़ा में भी आप लोग विभिन्न प्राजेक्टस करवाते हैं यह मुझे बहुत ही अच्छा लगा।

फिर फ़ुलडा (Fulda)मैं मस्जिद बैयतुल हमेद का उद्घघाटन हुआ। इस आयोजन में भी 330 मेहमान शामिल हुए और वहां के लार्ड मेयर तो आए थे लेकिन लार्ड मेयर सिर्फ़ बाहर स्वागत कर के चले गए थे। दूसरे इलाक़ों के मेयर साहिबान भी आए थे। कौंसल के मैंबरान और भूत पूर्व मैंबर पार्लीमैंट और विभिन्न पार्टीयों के चेयरमैन भी थे और राउंड टेबल वहां की एक कान्फ्रैंस (religious conference)है, एक कमेटी है राउंड टेबल, उस के चेयरमैन भी आए हुए थे। फ़ुलडा जो है यहां प्राय मुस्लमानों के ख़िलाफ़ काफ़ी शंकाए पाई जाती हैं बल्कि विरोध है और यह ईसाईयत का एक पुराना गढ़ है और अपनी रिवायात को स्थापित रखने वाला शहर है। कम से कम चर्च यह चाहता है कि रिवायतों को स्थापित रखें लेकिन लोग तो वहां भी ईसाईयत से बहुत दूर हटते जा रहे हैं। बहरहाल उनके ख़ौफ़ की वजह से चर्च के नुमाइंदे तो सारे नहीं आए और कुछ सियास्तदान भी नहीं आए। इसी तरह लार्ड मेयर भी बैठे रहे। उन्होंने यही कहा कि मैं तक़रीर नहीं करूँगा , आ कर स्वागत कर लूँगा लेकिन बहरहाल इस ख़ौफ़ से स्टेज पर नहीं बैठे कि लोग विरोध करेंगे। वहां जो मेहमान आए थे उनकी कुछ प्रितक्रयाए हैं।

एक मेहमान हारालड (Harald) साहिब कहते हैं कि उन्होंने अपनी तक़रीर में जो बताया कि जो साझी बात है उसपे हम सबको इकट्ठे होना चाहिए और इसी की वजह से आपसी भाईचारा और विश्व शान्ति की बुनियाद पड़ेगी और यह कहते हैं कि यह जो तरीक़ बताया गया है यह काम का तरीका दुनिया के मौजूदा हालात

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

में बहुत अधिक अनुकरण योग्य लगता है और इसी की इस वक़्त दुनिया को ज़रूरत है। फिर कहते हैं कि मैं जान चुका हूँ कि इस से पहले हमें इस्लामी शिक्षाओ के बारे में जो परिचय था वह इस्लाम की दरुस्त तस्वीर प्रस्तुत नहीं करता। इसलिए आज की शाम मेरे लिए एक सकारात्मक और अमन वाला पैग़ाम लाई है

एक मेहमान जो वहां के स्थानीय स्कूल के टीचर हैं कहते हैं कि यह जो तक़रीर है यह स्कूल में छात्रों को सुनवा कर पूछना चाहिए कि आप इस से क्या समझे और आपके ख़्याल में यह ख़ूबसूरत शिक्षा किस मज़हब की हो सकती है? कहते हैं कम से कम मुझे तो आप उस की आडीयो वीडीयो रिकार्डिंग ज़रूर मुहय्या करें ताकि में अपने स्कूल के छात्रों के सामने इस शाम की कैफ़यात शेयर कर सकूं ।

साथ वाले एक शहर के मेयर थे वह कहते हैं कि इमाम जमाअत अहमदिया ने दो तरफ़ की शंकाओं तथा सम्बन्धों का मुवाज़ना भी प्रस्तुत किया और समाज के वर्गों में मौजूद आपसी कश्मकश के कारण भी खोल कर बताए और खुले शब्दों में इन कारणों की निशानदेही भी कर दी जो समाज का अमन बर्बाद करते हैं मगर उस के बावजूद किसी वर्ग या फ़िरक़े या गिरोह की इज़्ज़त अन्फ़ुस पर कोई सख़्त बात नहीं की बल्कि इजतिमाई इन्सानी ज़मीर और विश्वव्यापि इन्सानी क़दरों के हवाले से फ़ूड फ़ार थॉट (food for thought)के रंग में बात करते गए

वहां की एक डाक्टर कोहलर (Dr. Koehler) हैं। कहती हैं कि मुझे इस बात ने बड़ा प्रभावित किया है कि आप लोग कितने खुले दिल के हैं और यही वह ख़ूबी है जिसकी आपके ख़लीफ़ा नसीहत कर रहे थे कि इन्सानी क़दरों के क़ियाम के लिए अपने दिलों को खोलना पड़ेगा और शंकाएं दूर करनी होंगे। फिर कहती हैं कि मैं भी अपने हस्पताल में कोशिश करती हूँ कि विश्व व्यापि धर्मों में भाईचारा बढ़े और लोगों की रूहानियत से सुकून हासिल हो। यही सुकून तथा अमन मुझे आज के आयोजन में देखने को मिला है। मैं बहुत ख़ुश हूँ कि मुझे यहां शामिल होने का अवसर मिला।

फिर बर्लिन में जिस आयोजन का मैंने ज़िक्र किया था यहां इस्लाम ऐंड यूरोप (Islam and Europe)के विषय पर ख़िताब था या सिवीलाइज़ेशन (Civilization)और कल्चर का मुवाज़ना। इस में सत्ताईस 27 मैंबर क़ौमी असैंबली, दफ़्तर ख़ारजा के तीन नुमाइंदे जिनमें मज़हब और सियासत के डायरैक्टर्ज़ भी शामिल थे, पाँच प्रोफ़ैसर जिनमें बर्लिन यूनीवर्सिटी की नायब सदर और जर्मनी में मध्य एशिया पर उस वक़्त सनद पाए जानेवाले प्रोफ़ैसर शटाइन बाख (Steinbach)शामिल थे और इस के इलावा यू ऐस ए और फ़्रांस एंबेसीज़ के पोलीटिक्ल ऑफीसर,हुकूमत के विभिन्न प्रतिनिधि, विभिन्न धर्मों और चर्चों और कम्यूनिटीज़ के प्रतिनिधि थे। प्रैस और मीडिया के प्रतिनधि भी थे और एमन्सिटी इंटरनैशनल के प्रतिनिधि भी थे।

इलैगज़ेंडर (Alexander) साहिब जो मैंबर आफ़ पार्लीमैंट हैं, कहते हैं कि जिस अमन और सलामती का आपने पैग़ाम दिया है इस का स्रोत क़ुरआन था और अपने मौक़िफ़ का समर्थन क़ुरआन और इस्लाम के संस्थापक के उपदेशों से किया। यद्यिप यह विषय नवीन था और वर्तमान समय के तक़ाज़ों से हम-आहंग था लेकिन ख़लीफ़ा ने अपने मौक़िफ़ को पुराने इस्लामी स्रोतों से स्पोर्ट कर के साबित किया कि इस्लाम और क़ुरआन ने मज़हब की बुनियाद पहले दिन से ही इन्सानी हमदर्दी और अमन तथा सलामती की शिक्षा पर रखी है। मेरे ख़्याल में इस ख़िताब की वसीअ पैमाने पर प्रकाशन होनी चाहिए ताकि मग़रिब में इस्लाम के बारे में वास्तविक शिक्षा से आम लोगों को भी परिचय हो।

फिर नील अनन (Niel Annen) साहिब जो कल्चरल मिनस्टर हैं कहते हैं कि जिस स्पष्टता, विस्तार और समीक्षात्मक तुलना के साथ इमाम जमाअत अहमदिया ने इस्लाम अहमदियत और बहैसीयत सामूहिक धर्म का परिचय और सामाजिक किरदार स्पष्ट किया है इस को समझने के बाद मैं महसूस करता हूँ कि जमाअत अहमदिया का इन्सानी हुक़ूक़ की शंकाओं के लिए आवाज़ उठाना किसी मज़हब या फ़िर्क़े की मदद नहीं बल्कि सामूहिक और वैश्विक तौर पर इन्सानी क़दरों की सुरक्षा की कोशिश होगी।

फिर क्रिस्टोफ स्ट्रॉक (Christoph Strack) साहिब हैं ,कहते हैं मैंने ज़िन्दगी में शायद ही कोई ऐसा प्रोग्राम देखा हो या इस में शामिल हुआ हूँ कि जिसको मुस्लमानों ने आयोजित किया हो और इस की सारी फ़िज़ा ऐसी सुकून वाली और इस में होने वाली गुफ़्तगु इतनी सार गर्भित और प्रमाणों वाली हो। मुझे ख़ुशी हुई कि किसी की नज़र तो ज़ाहिरी तहज़ीब और सभ्यता और सामाजिक तरक़्क़ी के अंदर छिपे हुए मतभेदों को देख सकती है। कहते हैं कि इस में आपने खुल कर इन्सानियत के सिर पर मंडलाने वाली ऐटमी जंग के ख़तरे से भी खुले शब्दों में ख़बरदार किया है।

फिर कर्स्टन बोशलिज़् (Christine Buchholz) साहिबा हैं जो मैंबर आफ़ पार्लीमैंट हैं ,कहती हैं कि इमाम जमाअत अहमदिया ने वर्तमान समय की नब्ज़ को बिलकुल सही तौर पर महसूस किया और चूँकि उनका इलाज दरुस्त है इसलिए उनके वर्णन किए गए इलाज में सामाजिक बदअमनी का स्थायी इलाज है।

फिर एक और औरत मैंबर आफ़ पार्लीमैंट हैं ज़ाकलेन (Zaklin) साहिबा। कहती हैं कि इमाम जमाअत अहमदिया ने अपना मौक़िफ़ समस्त दृष्टिकोणों से स्पष्ट किया और कोई शंका नहीं रहने दिया। कहती हैं मुझे उस के शब्द शब्द से से सहमति है।

एक प्रोफ़ैसर हीरबर्ट हैरिटे (Prof. Heribert Hirte) कहते हैं कि आप लोगों ने जमाअत को शिक्षा के मैदान में स्पष्ट कर के जमाअत अहमदिया को अन्य मज़हबी जमाअतों से अलग स्थान पर खड़ा कर दिया। जिस जमाअत के लोग शिक्षा पर इतना ध्यान देंगे इनकी मंज़िल ही यह है कि वे क़ियादत करें ना कि अंधा अनुसरण। फिर एक मैंबर पार्लयामैंट एक्सेल (Axel) साहिब हैं, कहते हैं का इस ख़िताब को जा कर दोबारा पढ़ूँगा और जहां तक मेरी पहुंच होगी उस को आगे भी वर्णन करूँगा।

फिर सबीन लीडिग (Sabine Leidig) साहिबा हैं। कहती हैं मेरा सम्बन्ध ख़ुद तो किसी मज़हब से भी नहीं है लेकिन बहैसीयत एक मज़हबी सरबराह इमाम जमाअत अहमदिया ने आने वाली नस्ल इन्सानी के दर्द को जिस तरह समय से पहले महसूस कर के आज की लीडर शिप को ख़बरदार किया है इस का मेरे दिल पर गहरा असर है और मेरी इच्छा है कि यह पैग़ाम आम हो ताकि इन्सानों का सामूहिक शऊर इस बारे में बेदार हो सके और अगली नस्लों की ज़िम्मेदारी को समझ सके।

फिर प्रोफ़ैसर क्रिस्टोफ गुलट मीन (Christoph Gultman)साहिब हैं। कहते हैं कि प्रोग्राम मुझे बहुत पसंद आया और ख़िताब से मुझे बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। बहुत से क़ुरआन के उद्धरण मैंने साथ साथ नोट भी किए हैं जिनका तक़रीर में वर्णन किया गया था। अब मैं उन्हें घर जा कर ज़रूर दोबारा पढ़ूँगा।

फिर एक ईसाई मेहमान हैं ,कहते हैं कि इस से पहले मैंने कभी भी यह नहीं सुना था कि इस्लाम अमन को इतना महत्तव देता है और अमन स्थापित करना चाहता है। इस बात की मुझे बहुत ख़ुशी हुई है कि इमाम जमाअत का ख़िताब आज विभिन्न स्यासी पार्टीज़ के प्रतिनिधियों ने सुना है। इसी तरह यहूदी रुबाई और दूसरे मुसलमान फ़िर्क़ों के लोग भी मुझे यहां नज़र आए।

फिर एक मेहमान वर्णन करते हैं कि ख़िताब में हर एक आदमी को इस की ज़िम्मेदारी की तरफ़ ध्यान दिलाया गया कि किस तरह से अमन स्थापित किया जा सकता है। बहुत आसान शब्दों में स्पष्ट कर दिया कि सब इन्सानों को अमन और प्यार से इकट्ठे रहना चाहिए। इस के लिए सबसे ज़रूरी यह बात है कि एक दूसरे का सम्मान किया जाए। यह बात भी उन्होंने वर्णन की कि दुनिया में हर चीज़ काफ़ी संख्या में मौजूद है और सब के लिए काफ़ी है अगर उस को सही तरह इस्तिमाल किया जाए।

फिर एक मेहमान कहती हैं कि आपने बहुत सी बातों की तरफ़ ध्यान दिलाया। सबसे पहले जिस बात का वर्णन किया वह यह थी कि आजकल के समाज में मज़हब को महत्त्व नहीं दिया जाता और मज़हब को नकारात्मक नज़र से देखा जाता है। कहती हैं कि यह बात हमें बतौर ईसाई भी महसूस होती है। इस के इलावा जो बात मुझे ख़लीफ़ा के ख़िताब में बहुत अहम लगी वह शिक्षा तथा तर्बीयत का महत्तव है। इस हवाले से तो अहमदिया मुस्लिम जमाअत वैसे ही एक नमूना है। क्योंकि जब इन्सानों को इल्म हो कि उनकी मुक़द्दस किताब क्या शिक्षा देती है तो फिर बहुत सी मुश्किलों से हम आज बचे रह सकते हैं। अत: यह आज अहमदी नौजवानों की भी ज़िम्मेदारी है कि खासतौर पर क़ुरआन करीम को पढ़ें और समझें ताकि उनको समझाया जाए और ये लोग फिर मजबूर होंगे कि इस पर ध्यान करें और इस की हिक्मत को समझें। इस शिक्षा पर अनुकरण करें या इस शिक्षा को मानें।

फिर एमन्सिटी इंटरनेशनल के वक्ता थे ,कहते हैं कि जो बातें की गईं, मुझे वह सुनकर दिल को बहुत सन्तोष महसूस हुआ और अपने दूसरे ख़लीफ़ा के हवाले से उन्होंने तहज़ीब और सभ्यता की जो प्रशंसा वर्णन की थी, दोनों का आपसी सम्बन्ध बताया इस से नवीन समय के लोग इनकार नहीं कर सकते। कहते हैं कि ख़लीफ़ा ने कुरान की आयतों की बड़े अहसन रंग में तफसीर की है। ये वही आयते हैं जो इस्लाम से दूर हुए लोग आगे पीछे से हट कर प्रस्तुत हैं।

फिर एक औरत हैं नाहोंडी (Nahawandi) साहिबा कहती हैं इस ख़िताब

की यूरोप में व्यापक पैमाने पर प्रकाशन होने से इस्लाम के बारे में पाए जाने वाली शंकाए दूर होंगी और एक तरफ से होने वाली नकारात्मक प्रतिक्रियाओं का दूर हो सकेगा।

फिर मस्जिद महदी आबाद का उद्घाटन था। इस में भी जर्मनी की नैशनल पार्लीमैंट के मैंबर थे, इलाक़े के लार्ड मेयर, प्रान्तीय असैंबली के मैंबर, प्रान्तीय असैंबली के डिप्टी स्पीकर, इलाक़े के पाँच मेयर, पाँच (डिस्ट्रिक्टस पार्लीमैंटस के चेयरमैन आए और इस आयोजन में लगभग 170 मेहमान शामिल हुए।

एक मेहमान जो वाइस मेयर हैं , यह औरत हैं,कहती हैं कि मैं वापस जा कर ज़रूर ख़लीफ़ा की बातों को फैलाऊंगी। और जब भी कोई इस्लाम पर एतराज़ करेगा तो मैं समय के ख़लीफ़ा के उपदेश को पेश करते हुए इस्लाम का दिफ़ा करने की कोशिश करूँगी। आप आज हम मेहमानों से ही सम्बोधित नहीं हुए बल्कि अपनी जमाअत के लोगों को भी इस तरफ़ ध्यान दिलाया कि आप लोगों ने मस्जिद के बनने के बाद पहले से बढ़कर इन्सानियत की सेवा करनी है।

फिर एक औरत हैं अंजलीका (Angelika) साहिबा। कहती हैं इस ख़िताब से मुझे यह शिक्षा प्राप्त हुई है कि हमें इस बारे में ध्यान देना चाहिए कि हमारा दूसरों से दैनिक का रवैय्या कैसा है। हमें दोस्तों और ग़ैरों की मदद करनी चाहिए।

फिर एक मेहमान कहते हैं कि यहां आना बड़ा अच्छा लगा। इस्लाम के बारे में बहुत सी शंकाएं दूर हो गईं और जिस तरह भाईचारा का पक्ष वर्णन किया है वह सब समस्त धर्मों के लिए महत्तव रखता है

फिर एक मेहमान उल्फ़ (Ulf) साहिब हैं जो कन्सलटैंट आफ़ मिनिस्टर प्रैज़ीडैंट Consultant of Ministerpresident) हैं। कहते हैं कि ख़िताब में जो बात मुझे बहुत उम्दा लगी वह यह थी कि आपने ऐसे पक्ष वर्णन किए जो समस्त धर्मों में एकता पैदा करने वाले हैं। मैं तो एक ईसाई चर्च का मैंबर हूँ और बावजूद उस के कि हमारे इबादत के तरीक़ और आपके मज़हब में बहुत सी बातें ऐसी हैं जिनका आपस में मतभेद होगा लेकिन फिर भी इमाम जमाअत ने ऐसे पहलू वर्णन किए जिनकी हर कोई समर्थन कर सकता है। मेरा तो यह ईमान है कि हम सब का एक ही ख़ुदा है। केवल इबादत के तरीक़ा विभिन्न है। चलो इतना तो कम से कम क़रीब आना शुरू हो गए।

एक मेहमान वेटक (Witecke) साहिब थे वह कहते हैं कि अपने ख़िताब में औरत के स्थान को बहुत अच्छे रंग में वर्णन किया है और इस से इस्लाम में औरत का स्थान और समाज में औरत का सम्मान प्रकट होता है। अल्लाह तआला करे कि इन लोगों के सीने इस्लाम की वास्तविक शिक्षा को समझने के लिए भी खुल जाएं और उसे स्वीकार करने वाले भी हूों और वास्तविक तौहीद को मानने वाले भी हों और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे के नीचे आने वाले हों। यही उनकी बक़ा है वर्ना यह जो उनका विचार है कि अस्थायी दुनियावी तरक़्क़ियां उनकी बक़ा हैं तो यह उनकी बक़ा की कोई गारन्टी नहीं।

मीडिया के बारे में भी कुछ बात बता दूं कि हॉलैंड में दो मीडिया चैनल्ज़ और टीवी नन सपीत (Nunspeet) और यूरो टाईम्स में रिपोर्टें प्रसारित हुईं। 75 हज़ार लोगों तक पहुंचीं। बैयतुल आफियत अलमेरे की टीवी चैनल पर रिपोर्ट प्रसारित हुई। पंद्रह लाख लोगों तक पहुंची। पहले 75 हज़ार लोगों तक थी। सोशल मीडिया के माध्यम से भी हज़ारों में पहुंची। हॉलैंड के दौरान उनका ख़्याल है कि मीडिया के द्वारा 16 लाख लोगों तक पैग़ाम पहुंचा जिसमें अधिकतर अलमेरे मस्जिद की कवरेज थी जो उनके नैशनल टीवी ने दी थी।

फ्रांस की न्यूज़ एजैंसी है "नैशनल न्यूज़ एजैंसी" उन्होंने यूनेस्को वाले ख़िताब के हवाले से एक लेख प्रकाशित किया और इस लेख के आख़िर में लिखने वाले ने इस बात पर हैरानी का ज़िक्र किया कि ख़लीफ़ा ने अहमदियों के अत्याचारों पर कोई बात नहीं की। फिर स्टरास बर्ग में मस्जिद महदी के उद्घाटन के हवाले से डी एनए में ख़बर प्रसारित हुई। रेडियो चैनल पर रिपोर्ट आई और इस तरह यह मीडिया) आउट लुट्स के माध्यम से भी कई मिलियन लोगों तक पहुंची।

जर्मनी में वेज़ बादिन और फ़लडा और बर्लिन और महदी आबाद के जो फंक्शन हुए हैं उनमें सामूहिक समीक्षा के अनुसार कुल 13 अख़बारों में, चार टीवी चैनल्ज़ पर, एक रेडियो चैनल पर और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में 12 रिपोर्टें प्रकाशित हुई हैं और रिपोर्ट देने वाले के ख़्याल में जो कि ख़ारिजा सैक्रेटरी हैं, उनका ख़्याल है कि लगभग 49 मिलियन तक इस विभिन्न मीडिया के माध्यम से यह पैग़ाम पहुंचा है। इस तरह रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ ने भी अपने माध्यम से लगभग डेढ़ मिलियन लोगों तक पैग़ाम पहुंचाया। अल्लाह करे कि यह पैग़ाम जैसा कि पहले मैंने कहा लोगों के समझने का कारण भी बने।

नमाज़ों के बाद में एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीय मौलवी महमूद अहमद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला पाल घाट (केरला इंडिया का है। 54 साल की उम्र में15 अक्तूबर को उनकी वफ़ात हुई थी। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहे राजेऊन ।

उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके पिता आदरणीय मौलवी के मुहम्मद अलवी साहिब के माध्यम से आई थी जो कि ग़ैर अहमदियों के प्रसिद्ध आलिम थे। अहमदियत स्वीकार करने की वजह से उन्हें बहुत मुख़ालिफ़त का सामना करना पड़ा। उनके द्वारा सूबा केरला में सैंकड़ों लोगों को अहमदियत स्वीकार करने की तौफ़ीक़ हासिल हुई। मरहूम मौलवी के महमूद अहमद साहिब ने अपने पिता की नसीहत पर कॉलेज की शिक्षा छोड़ कर के जामिया अहमदिया में दाख़िला लिया था और 1988 ई में जामिया पास किया। मरहूम एक बहुत बड़े आलिम थे, मुत्तक़ी थे, नमाज़ रोज़ाो के पाबंद, तहज्जुद पढ़ने वाले , दुआ करने वाले, ग़रीबों का ध्यान रखने वाले, साबिर और शुक्र करने वाले मुख़लिस इन्सान थे। क़ुरआन करीम , हदीस, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की और ख़ुलफ़ाए किराम की किताबों का गहरा अध्ययन था। अरबी, उर्दू, मलयालम और तामिल भाषाओं पर भी काफ़ी महारत थी। मरहूम के पास अपनी व्यक्तिगत लाइब्रेरी थी। इस में बेशुमार नायाब किताबें थीं। सूबा केरला, तामिलनाडू, लक्ष्यद्वीर और देश के बाहर कुवैत में उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। एक अच्छे तकरीर करने वाले और मुनाज़रा करने वाले भी थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल राबे रहमहुल्लहा के आदेश पर 1994 ई में उनको मुहतरम मौलाना दोस्त मुहम्मद साहिब शाहिद और हाफ़िज़ मुज़फ़्फ़र अहमद साहिब के साथ जमाअत के एक कट्टर मुख़ालिफ़ मौलवी के साथ मुनाज़रे की भी तौफ़ीक़ मिली। मरहूम मूसी थे। पीछ रहने वालों में दो बीवियां और तीन बेटियां शामिल हैं। दो दामाद अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वाकिफ ज़िन्दगी हैं।

उनके एक दामाद लिखते हैं कि जामिया के आख़िरी साल की छुट्टियों में अपने वालिद साहिब की हिदायत पर घर नहीं गए बल्कि दो महीने विशेष रूप से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का अध्ययन करने के लिए वक़्फ़ कर दिया। जामिया के छाक्षों के लिए इस में एक बड़ा नमूना है। हिन्दुस्तान के सूबा केरला से अहमदियत को मिटाने के लिए वहां के समस्त ग़ैर अहमदी मुस्लमान फ़िर्क़ों ने मुत्तहिद हो कर एक अंजुमन बनाई जिसका नाम अंजुमन इशाअत इस्लाम रखा। यह एक संस्था थी। इस तंज़ीम ने सारे केरला में निरन्तर जमाअत अहमदिया के ख़िलाफ़ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरात पर एतराज़ करते हुए जलसे आयोजित किए। इस के जवाब में जगह जगह पर जमाअत ने जो जलसे किए वह मरहूम की ही क़ियादत में हुए। 1998 ई में और 2015 ई में अंजुमन इशाअत इस्लाम के साथ जमाअत के तारीख़ी मुनाज़रे हुए जिसमें महोदय को बतौर मुनाज़िर ख़िदमात अदा करने की तौफ़ीक़ मिली। इस के अतिरिक्त अहले क़ुरआन और अहले हदीस के साथ भी केवल अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आपने कामयाब मुबाहसे करने का सौभाग्य पाया। मरहूम नमाज़ रोज़ा के के पाबंद थे। छोटी उम्र में ही तहज्जुद पढ़ने की आदत थी। उनके दामाद लिखते हैं कि लड़कपन की एक घटना वर्णन की जाती है कि एक बार मरहूम नमाज़ तहज्जुद अदा नहीं कर सके जिस पर उनके वालिद साहिब ने कहा कि बेटा क्या आप नहीं चाहते कि आपको मुक़ामे महमूद मिले? इस दिन से आपने इस वसीयत को पल्ले बांध लिया और उम्र-भर इस पर अनुकरण किया यहां तक कि बीमारी और बहुत कमज़ोरी की हालत में भी इस पर कायम रहे। ख़िलाफ़त के साथ अत्यधिक मुहब्बत और अक़ीदत थी और इख़लास का गहरा सम्बन्ध था। शैक्षिक, तर्बीयती, तब्लीग़ी बैठकों में बड़ा हिस्सा ख़िलाफ़त के लिए विशेष होता था। इसी विषय पर बात करते थे और इस विषय पर बात करते हुए अक्सर जज़बाती हो जाया करते थे। 2015 ई में एक ख़ातून अपने बच्चों के साथ अहमदी हुईं उनके पति देश के बाहर थे। जब वह आए तो उन्होंने उनको तब्लीग़ की। उन्होंने एक सवाल किया कि ख़िलाफ़त को मानने की ज़रूरत किया है? इस पर मरहूम ने मन्सब ख़िलाफ़त और ख़िलाफ़त के महत्व तथा बरकतों के बारे में इतने जज़बाती अंदाज़ में बातें कीं कि उनकी आँखें बहने लगीं जिसका इस ग़ैर जमाअत पर भी ऐसा असर हुआ कि बाक़ी बातें तो ठीक थीं और इस बात को सुनते ही शीघ्र उन्होंने भी बैअत कर ली।

हक़ीक़त में वह ख़िलाफ़त के सुल्तान नसीर थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 22 नवम्बर 2019 पृष्ठ 5 से 11)

पृष्ठ 2 का शेष

पर अमीर साहिब ने निवेदन किया कि इस वक़्त जो यहां नायब उमरा और सीक्रट्रियान हाज़िर हैं उनकी कुल संख्या 32 है।

*इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नायब अमीर डाक्टर हमीदुर्रहमान साहिब से उन के सपुर्द काम के बारे में पूछने फ़रमाया। डाक्टर हमीदुर्रहमान साहिब ने निवेदन किया कि मेरे सपुर्द नॉर्थ वेस्टर्न स्टेटस की जमाअतें हैं। अमीर साहिब की हिदायतों के अनुसार जब भी ज़रूरत होती है मैं इन जमाअतों का दौरा करता हूँ।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप ख़ुद से इन जमाअतों का दौरा करने का प्रोग्राम नहीं बनाते ?आप को ख़ुद उन जमाअतों के दौरे करने चाहिऐं। इन जमाअतों की तजनीद किया है और उनमें से चन्दा आम अदा करने वाले कितने हैं और उनमें से कितने कमाने वाले हैं? सबसे बड़ी जमाअत कौन सी है और उसकी तजनीद क्या है? डाक्टर साहिब ने निवेदन किया कि सबसे बड़ी जमाअत LA East है। चन्दा अदा करने वालों की संख्या के बारे में से मुझे अमीर साहिब की तरफ़ से latest डैटा मुहय्या नहीं किया गया।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह तो आपको चाहिए था कि आप अपनी जमाअतों का डैटा उन्हें मुहय्या करते बजाय उस के कि वह आपको मुहय्या करें। आप अपनी जमाअतों के प्रतिनिधि हैं। आपको चाहिए कि आप यह संख्या मुहय्या करें।

*LA East मैं कमाने वाले अहमदियों की संख्या के बारे में नेशनल सेक्रेटरी माल ने निवेदन किया कि वहां कमाने वाले चन्दा देने वालों की संख्या 155 है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी माल ने निवेदन किया कि हमने चन्दा की अदायगी के हिसाब को समक्ष रखकर लोगों की आय का हिसाब लगाया है तो मालूम हुआ है कि यह आय poverty line से नीचे है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: ऐसे लोगों के लिए आपको चैरिटी की ज़रूरत पड़ती होगी। आपको मर्कज़ की मदद की ज़रूरत है तो बताएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने पूछा: लोगों को उनकी असल आय पर चन्दा अदा करने के बारे में से आपने क्या क़दम उठाए हैं? इस पर सेक्रेटरी माल ने निवेदन किया कि हमने हर जमाअत को गिनती उपलब्ध किए हैं कि आपके लाज़िमी चन्दों की यह अवस्था है। पहला क़दम तो यही है कि इन जमाअतों में awareness पैदा की जाए।

*इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी तरबियत से पूछा कि LA East जहां आपकी मस्जिद है वहां मग़रिब तथा इशा की नमाज़ों की अदायगी के लिए कितने लोग आते हैं? सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि मेरे पास इस वक़्त गिनती मौजूद नहीं हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आप बग़ैर तलवार के मैदान जंग में आ गए हैं।

*इसके बाद नायब अमीर डाक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब ने निवेदन किया कि ख़ाकसार नायब अमीर के अतिरिक्त नेशनल सेक्रेटरी समई तथा बस्ती भी है और मेरे सपुर्द मीडिया टीम भी है। (इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि नेशनल सेक्रेटरी उमूरे ख़ारिजा के नियम निकाल कर रखें।)

*इसके बाद नायब अमीर वसीम मलिक साहिब ने बताया कि उनके सपुर्द देश भर में जमाअतों का दौरा कर के मस्जिद फ़ंड इकट्ठा करना है। इसी तरह यू.ऐस.ए जमाअत का IT डिपार्टमैंट भी उनके सपुर्द है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने पूछा: मस्जिद फ़ंड के लिए कितनी रक़म इकट्ठी करते हैं? इस साल साल कितनी रक़म जमा हुई है?

इस पर महोदय ने निवेदन किया कि 2018 ई - 2019 की पहली तीन महीनों में हमने 2 लाख 18 हज़ार डॉलरज़ जमा किए हैं। जबकि पिछले माली साल में 3.9 मिलियन डॉलरज़ जमा किए गए थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने पूछा कि इस में से कितनी रक़म ख़र्च हुई है। अमीर साहिब ने निवेदन किया कि सारी रक़म ख़र्च हो चुकी है बल्किम स्जिद फ़ंड उस वक़्त घाटे में है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: उस का अर्थ है कि इस वक़्त मस्जिद फ़ंड में आपके पास कोई रक़म नहीं है। अगली मस्जिद बनाने का कोई मन्सूबा नहीं है? अगले दो तीन साल में किसी भी मस्जिद का प्राजेक्ट नहीं है? इस पर नायब अमीर फ़लाहुद्दीन शम्स साहिब जो जायदाद विभाग की निगरानी भी करते हैं उन्होंने निवेदन किया कि Zion,Ilinois मैं हम नई इमारत ख़रीद रहे हैं। वहां नई मस्जिद बुनियाद होगी इन्शा अल्लाह। इस का आरम्भ हो चुका है। हम ने दस एकड़ की जगह ख़रीदी है और इस की सफ़ाई का काम शुरू हो चुका है। अगले साल तक हमारा मस्जिद की बुनियाद पूर्ण करने का मन्सूबा है। Zion के लिए स्पेशल फ़ंड है। वहां उस वक़्त हमारे पास तीन बिल्डिंगज़ हैं जिनमें से दो पहले ही फ़रोख़्त की जा चुकी हैं और एक मस्जिद मुरब्बी हाऊस है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर महोदय ने निवेदन किया कि नई जगह जो ख़रीदी है वो मौजूदा जगह से ज़्यादा दूर नहीं है। तीन से चार मील की दूरी है। अहमदियों की अधिकतर भी इसी इलाक़ा में रहती है। वहां छोटी जमाअत है इसलिए 5500 वर्ग फुट की मस्जिद बुनियाद कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर महोदय ने निवेदन किया कि जमाअत की तजनीद 189 है। वहां इस वक़्त जुम्अ: पर 12 से 15 मर्द और उतनी ही औरतें शामिल होती हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: 189 में से सिर्फ 25 से 30 लोग जुम्अ: पर हाज़िर होते हैं। वहां पर तरबियत की ज़रूरत है।

*अमीर साहिब ने निवेदन किया कि अबूबकर सईद साहिब इंटरनल आडीटर भी इसी जमाअत से हैं। इस पर अबूबकर सईद साहिब ने निवेदन किया कि यह संख्या ठीक नहीं है। जुम्अ: पर 45 के क़रीब हाज़िरी होती है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह संख्या भी कोई हौसला बढ़ाने वाली नहीं है। तीसरा हिस्सा भी नहीं है। अबूबकर सईद साहिब ने निवेदन किया कि मैं वहां से 45 मिनट की ड्राईव पर रहता हूँ इसलिए में जुम्अ: मिलवाकी जमाअत में अदा करता हूँ। मिलवाकी और ज़ाइन की जमाअत के एक ही मुबल्लिग़ हैं। वह महीना में एक जुम्अ: Zion में अदा करते हैं।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आपको वहां स्थायी मुबल्लिग़ की ज़रूरत नहीं है? इस पर अमीर साहिब ने निवेदन किया कि और अधिक मुबल्लग़ीन मिलेंगे तो वहां पर भी मुबल्लिग़ का तक़र्रुर करने का प्लान है। Zion मिलवाकी और शिकागो के मध्य है। मिलवाकी में भी मुबल्लिग़ मौजूद है और शिकागो में भी मुबल्लिग़ है। हमारा इरादा है कि Zion में भी मुरब्बी हाऊस बनाएँ और इसके बाद वहां मुबल्लिग़ का तक़र्रुर हो जाएगा।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के पूछने पर अमीर साहिब ने निवेदन किया कि हमारी कुल 74 जमाअतों में से 56 जमाअतों में मस्जिद मौजूद हैं।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के पूछने पर सेक्रेटरी जायदाद ने निवेदन किया कि इन 56 मस्जिद में से 19 नियमित purpose-built मस्जिद हैं जबकि बाक़ी 37 चर्चज़ और अन्य इमारतें हैं जिन्हें मस्जिद में तबदील किया गया है। हुज़ूर अनवर के पूछने पर सेक्रेटरी जायदाद ने निवेदन किया कि अमरीका में जमाअत की प्रापर्टी जिनमें कुछ ख़ाली ज़मीन के टुकड़े भी शामिल हैं उनका कुल क्षेत्रफल 1000 एकड़ से अधिक होगा। उनकी क़ीमत 120 से 122 मिलियन डॉलर्ज़ के क़रीब होगी। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस हिसाब से आपकी इंशोरंस तो बहुत कम है। सेक्रेटरी जायदाद ने निवेदन किया कि जो ख़ाली ज़मीन है जहां कोई इमारतें इत्यादि बुनियाद नहीं हैं उनकी इंशोरंस नहीं है।

*इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी इशाअत ने निवेदन किया कि पिछले दो सालों में हमने चार किताबें पूर्ण की हैं जिन में सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन (Chief of the Prophets) और कर ना कर शामिल हैं मर्कज़ से आज्ञा आ चुकी है। सीरत ख़ातमुल अनबिया तो मर्कज़ से प्रकाशित होगी लेकिन कर ना कर यहां अमरीका से प्रकाशित होगी। शायद अन्सारुल्लाह प्रकाशित करेगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी इशाअत ने निवेदन किया कि दस हज़ार की संख्या में तो हम प्रकाशित नहीं कर सकते क्योंकि यहां इतनी बड़ी मार्कीट नहीं है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसका अंग्रेज़ी में अनुवाद हो रहा है। अंग्रेज़ी किताबों की मांग तो सारी दुनिया में है। अगर आप प्रकाशति करें तो यू.के की जमाअत ही आपसे दस हज़ार कापी ख़रीद लेगी। लेकिन अमरीकन अंग्रेज़ी में spelling इत्यादि का फ़र्क़ होता है इसलिए आप वकीलुल तसनीफ़ साहिब लंदन को भिजवा दें। मर्कज़ उसे प्रकाशित कर सकता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई (यह नोट कर लें। अगर उसका अनुवाद हो गया है तो इस को लंदन में प्रकाशित कर दें)

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी तरबियत से जमाअतों की संख्या और तजनीद के बारे में से पूछा। इस पर

सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि अमरीका में 74 जमाअतें हैं जबकि कुल तजनीद 20 हज़ार 394 है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हाल ही में थाईलैंड, श्रीलंका और नेपाल इत्यादि से काफ़ी अहमदी रिफ्यूजीज़ अमरीका स्थनांतरित हुए हैं। उनको भी तजनीद में शामिल करें।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि जमाअत में नमाज़ सैंटरज़ की संख्या 200 से लेकर 275 तक है। संख्या तबदील होती रहती है क्योंकि बहुत से नमाज़ सैंटर लोगों के व्यक्तिगत घरों में बने हुए हैं। जिन लोगों के घर मस्जिद से दस से पंद्रह मिनट की ड्राईव पर हैं ,वहां नमाज़ सैंटर नहीं बनाए जाते लेकिन जिन लोगों के घर मस्जिद से आधे घंटे की ड्राईव या इस से ज़्यादा दूरी पर हैं वहां नमाज़ सैंटर बनाए गए हैं। पिछले कुछ सालों में नमाज़ सैंटरों की संख्या 200 से ऊपर ही रही है।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि ख़ुद्दाम , अतफ़ाल और अन्सार को मिला कर संख्या 8500 के क़रीब बनती है। हम ने सर्वे किया था। इस सर्वे के अनुसार 35प्रतिशत लोग मस्जिद में बाक़ायदगी से नमाज़ अदा करते हैं। बाक़ी 22 प्रतिशत का कहना है कि वे हफ़्ता में दो से तीन मर्तबा मस्जिद जाते हैं।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि स्प्रिंग वैली , बैयतुर्रहमान की जमाअत में नमाज़ पढ़ने वालों की संख्या कम है। यहां हमें इस बारे में से challenges का सामना है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर अज़हर हनीफ़ साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज अमरीका ने निवेदन किया कि यहां पर मर्द औरतों को मिला कर जुम्अ: पर कुल हाज़िरी 350 के क़रीब होती है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह तो पाँचवे हिस्सा से भी कम है। अगर लोग नहीं आर हे तो उस के लिए आप क्या कोशिश कर रहे हैं ? लोगों को मस्जिद बुलाने के लिए तरबियत विभाग ने किया क़दम किए हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदुहल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि बैयतुर्रहमान के पास तीन जमाअतें हैं और यहां एक स्थानीय जमाअत के आमिला मैंबर्ज़ की संख्या 20 के क़रीब होगी और तीन जमाअतों के आमिला मैंबर्ज़ की संख्या 60 होगी। इसी तरह तीनों जमाअतों में ख़ुद्दामुल अहमिदया और अन्सारुल्लाह की आमिला मैंबर्ज़ की संख्या 60, 60 होगी। इस तरह 180 तो सिर्फ आमिला मैंबर्ज़ ही बन जाते हैं। अगर आमिला मैंबर्ज़ ही नमाज़ों पर आना शुरू होजाएं तो मौजूदा संख्या से तीन गुना इज़ाफ़ा हो जाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: नमाज़ बुनियादी चीज़ है। मैं तो समय समय पर, अगर महीना में एक बार नहीं तो दो महीना में एक बार तो ज़रूर नमाज़ की तरफ़ ध्यान दिलाता हूँ। यह बहुत ज़रूरी है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर तरबियत ठीक होगी तो सेक्रेटरी माल को चन्दा की वसूली के बारे में से भी कोई मसला नहीं होगा। इसलिए तरबियत बहुत अहम ज़िम्मेदारी है। सबसे पहले नमाज़ की तरफ़ ध्यान दें और इसके बाद माली क़ुर्बानी की तरफ़ ध्यान दें। इस के लिए आइन्दा एक दो हफ़्ता में नियमित एक मन्सूबा बनाएँ। जो भी मन्सूबा बनाएँ इसकी एक नक़ल मुझे भी भिजवाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि पिछले तीन सालों में उन्होंने 20 से 30 जमाअतों का दौरा किया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मुबल्लग़ीन से भी मदद लिया करें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि पिछले दो तीन साल से तरबियत विभाग के पास नियमित कोई मुबल्लिग़ नहीं है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आपके पास मुबल्लग़ीन की कमी है। पाकिस्तान से मुबल्लग़ीन को यहां का वीज़ा नहीं मिलता। घाना के मुबल्लग़ीन को तो वीज़ा मिल सकता है। वहां से भी मुबल्लिग़ भिजवाए जा सकते हैं।

इसी तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने मुबल्लिग़ इंचार्ज साहिब से फ़रमाया: आपको चाहिए कि अमरीका से भी ज़्यादा से ज़्यादा लड़कों को जामिया अहमदिया भिजवाएं उस के लिए नियमित मन्सूबा बनाएँ और कोशिश करें कि अफ़्रीकन अमरीकन में से अगर दस नहीं तो कम से कम एक या दो अफ़्रीकन अमरीकन लड़के ज़रूर जामिया जाएं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर आमिला के एक मैंबर ने निवेदन किया कि हमें वाक़फ़ीन नौ के दस प्रतिशत बच्चों को जामिआ भिजवाने का टार्गेट मिला था। इस साल यहां से तीन वाक़फ़ीन नौ जामिआ भिजवाए गए हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह तो टार्गेट का तीसरा हिस्सा बनता है। कोशिश करें कि अमरीका से ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों को जामिया भिजवाया जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर अफ़्रीकन अमरीकन आमिला मैंबर अबूबकर साहिब ने निवेदन किया कि उनका एक बेटा है। उन की इच्छा है कि वह हाई स्कूल की पढ़ाई पूर्ण करने के बाद जामिया अहमदिया में दाख़िल हो। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: और भी घाना के लोग जिनके बच्चे वक़्फ़ नौ में हैं उन्हें जामिया अहमदिया में भिजवाने के बारे में से कोशिश की जाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने अबूबकर सईद साहिब से फ़रमाया: आपने अफ़्रीकन अमरीकन वाक़फ़ीन के अतिरिक्त वैस्ट अफ़्रीक़ा से सम्बन्ध रखने वाले दस लड़के मुझे जामिया के लिए देने हैं। यह आपका टार्गेट है और आपने उसे ज़रूर प्राप्त करना है।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी तरबियत से मुख़ातिब होते हुए फ़रमाया: अगर आप अपनी आमिला के मेम्बरों के पीछे पड़ जाएं और उन्हें नमाज़ बाजमाअत की महत्व का एहसास दिलाएँ तो इस से नमाज़ियों की संख्या में काफ़ी इज़ाफ़ा हो जाएगा।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर जनरल सेक्रेटरी ने निवेदन किया कि 60 प्रतिशत जमाअतें अपनी रिपोर्टस भिजवाती हैं। जो नहीं भिजवातीं उन्हें बार-बार याददहानी करवाई जाती है और अब इस में इज़ाफ़ा हो रहा है।

*इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी तब्लीग़ से फ़रमाया: आप स्पेनिश क्षेत्र पर ज़्यादा ध्यान दे रहे हैं। पूरे अमरीका में भी तब्लीग़ के बारे में से आपका कोई मन्सूबा है? इस पर नेशनल सेक्रेटरी तब्लीग़ ने निवेदन किया कि शूरा में भी तब्लीग़ के बारे में से परामर्श थे जिनकी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने आज्ञा प्रदान फ़रमाई थी। हम उन पर काम कर रहे हैं। इसी तरह बीच बीच में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ की तरफ़ से जो भी हिदायतें मिलती हैं इस पर अनुकरण करने की कोशिश होती है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने यू.के में मुबल्लग़ीन की मीटिंग के अवसर पर फ़रमाया था कि इस्लाम , काफ़ी और केक को ही बहुत ना समझें । इसलिए अब हम और अधिक चीज़ों पर भी ग़ौर कर रहे हैं। इसी तरह रिव्यू आफ़ रीलीजनज़ को तब्लीग़ के लिए इस्तिमाल करने के बारे में से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई थी। हमने उस के लिए एक मैंबर मुक़र्रर किया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने पड़ोसियों को तब्लीग़ करने के बारे में से हिदायत फ़रमाई थी। इस बारे में भी कोशिश की जा रही है।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि इस्लाम , केक और काफ़ी के प्रोग्राम के द्वारा आपके कुल कितने सम्पर्क स्थापित हुए हैं? इस पर सेक्रेटरी तब्लीग़ ने निवेदन किया कि पिछले अढ़ाई सालों में इस्लाम, केक

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 5 December 2019 Issue No. 49

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

और काफ़ी की कुल 4100 बैठकें आयोजित हुईं जिनके द्वारा 11 हज़ार 300 लोगों से सम्पर्क हुआ। लेकिन वे लोग जिन को हमने अपने डेटाबेस में दाख़िल किया है उन की संख्या 1027 बनती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मुस्लिम काउंसल या मुस्लिम कम्यूनिटी की तरफ़ से विरोध का सामना भी होता है? अभी उन्होंने एक ओपन लैटर भी लिखा था जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़ात पर काफ़ी आरोप किए थे। आपने उनके जवाब भी दिए हैं? नेशनल सेक्रेटरी तब्लीग़ ने निवेदन किया कि अभी तक उनके जवाबात नहीं दिए। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: उन आरोपों के शीघ्र जवाब देने चाहिऐं। वर्ना कुछ मुस्लमान जो यह एतराज़ पढ़ेंगे वे सोचेंगे कि यह एतराज़ ठीक हैं। आपको चाहिए कि कम से कम पाँच सौ लोगों की एक टीम बनाएँ जो कि सोशल मीडिया पर फ़ौरी तौर पर जवाब दें। इसके बाद अगर आप इस बारे में से तफ़सीली जवाब देना चाहते हैं तो उनको viral करने से पहले उनकी आज्ञा मुझ से लें। इसलिए ग़ैर अहमदियों ने जो ख़त लिखा था उस का कल तक कम से कम 100 अहमदियों को चाहिए कि जवाब दे दें। आज रात इसी काम पर लगाऐं।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी तालीम आतिफ़ मियां से फ़रमाया कि आप सेक्रेटरी तालीम हैं। मैं तो समझा था कि आप जमाअत के इकनॉमिक एडवाइज़र होंगे क्योंकि इमरान ख़ान ने तो आपको एडवाइज़री कमेटी का मैंबर बनाने से इनकार कर दिया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई : उन्हें फिनांस कमेटी का मैंबर भी होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर नेशनल सेक्रेटरी तालीम ने निवेदन किया कि उनके पास इस वक़्त यूनीवर्सिटीयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र का डैटा मौजूद नहीं है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आपके पास यह डैटा तो होना चाहिए। मैंने ख़ुद्दामुल अहमिदया और लजना इमाउल्लाह को कहा है कि वे उमूर तलबा विभाग और मुहतमिम उमूर तलबा मुक़र्रर करें जिनका काम ही छात्रों की निगरानी करना हो। आप उनसे डैटा प्राप्त कर लें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर नेशनल सेक्रेटरी शिक्षा ने निवेदन किया कि हमने विभिन्न age groups के लिए विभिन्न प्रोग्राम रखे हैं। उदाहरण के तौर पर हमने नर्सरी से लेकर आठवीं क्लास के बच्चों के लिए Maths का एक प्रोग्राम रखा है जो कि वे गर्मीयों में पूर्ण करेंगे।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने पूछने फ़रमाया कि 12 ग्रेड के इम्तहानों में बच्चों के नतीजे कैसे आ रहे हैं? इस पर सेक्रेटरी शिक्षा ने निवेदन किया कि नतीजे बहुत ज़्यादा अच्छे नहीं हैं। इस बारे में से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि इस को शूरा में रखें । इस पर महोदय ने कहा हम ने ख़ुद्दामुल अहमिदया के साथ भी उसको discuss किया है और हुज़ूर अनवर की हिदायत के अनुसार शूरा में भी रखेंगे कि किस तरह हम अपने बच्चों के शिक्षा के स्तर को बेहतर कर सकते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सबसे पहले तो डैटा इकट्ठा करें कि कितने बच्चे , बच्चियां हैं जो यूनीवर्सिटीयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और कितने स्कूलों में हैं। आपके पास यह सारी मालूमात होनी चाहिऐं कि उनके नाम, उनकी उमरें, उनकी शिक्षा, उनके आगे भविष्य के प्लान क्या हैं। फिर हर जमाअत में एक कौंसलिंग का सिस्टम भी होना चाहिए। कम से कम बड़े शहरों की बड़ी बड़ी जमाअतों में यह सिस्टम ज़रूर मौजूद होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आम तौर पर छात्र विभिन्न इदारों और आर्गेनाईज़ेशनज़ से रहनुमाई लेते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए। कुछ तो कमर्शियल संस्थाएं भी हैं जो नियमित फ़ीस लेकर बताते हैं कि आपको क्या करना चाहिए। इसलिए अगर आप हाई स्कूल के छात्र को उनके भविष्य के बारे में से कौंसलिंग मुहय्या करें कि उन्हें कौन सी फ़ील्ड धारण करनी चाहिए और कौन सी फ़ील्ड अहम है तो इस से उनको बहुत फ़ायदा होगा। हमारे छात्र को

पृष्ठ 1 का शेष

डालने के अयोग्य होना स्पष्ट इस बात की दलील है कि उबूदीयत, फ़ैज़ान रबूबियत के अतिरिक्त नहीं रह सकती। हमारे जिस्म का ज़र्रा ज़र्रा फरशितों का हुक्म रखता है। अगर ऐसा ना होता तो फिर दवा और इस से बढ़कर दुआ का उसूल ही व्यर्थ और बेजान होता।

ज़मीन , आसमान और ज़मीन तथा आसमानों के बीच जो कुछ है उस पर नज़र करो और सोचो कि क्या ये समस्त मख़लूक़ात अपने आप अपने क़ियाम और हस्ती में स्थायी अधिकार रखते हैं या किसी के मुहताज हैं ?

समस्त मख़लूक़ात आसमान के ग्रहों से लेकर ज़मीन की वस्तुएं तक अपनी बनावट ही में उबूदीयत का रंग रखती हैं। हर पत्ता से यह पता मिलता है और हर शाख़ और आवाज़ से यह आवाज़ निकलती है कि उलूहियत अपना काम कर रही है। इस के सूक्ष्म से सूक्ष्म अधिकार जिन को हम विचार और ताकत से वर्णन नहीं कर सकते। बल्कि कामिल तौर पर समझ भी नहीं सकते। अपना काम कर रहे हैं अत: अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ (अल-बक़र :256) अर्थात अल्लाह तआला ही एक ऐसी ज़ात है जो पूर्ण गुणों वाली और हर एक दोष से पवित्र है। वही इबादत के योग्य है। इसी का वजूद प्रमाणों के प्रमाणित है क्योंकि वह ही अपने आप जीवित और अपनी ज़ात में क़ाय है और उस के अतिरिक्त और किसी चीज़ में ही अपने आप और स्वयं क़ायम होने के गुण नहीं पाए जाते। क्या मतलब कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त और किसी में यह विशेषताएं नज़र नहीं आती कि बिना किसी कारण के आप ही मौजूद और क़ायम हो या कि इस संसार की जो कमाल हिक्मत और सुदृढ़ क्रम से बनाया गया है मूल कारण हो सके। अत: इस से पचा चलता है है कि ख़ुदा तआला के अतिरिक्त और कोई ऐसी हस्ती नहीं है जो इन संसार की सृष्टियों में परिवर्तन और तब्दीली कर सकती हो या प्रत्येक वस्तु के जीवन तथा स्थापित होने का कारण हो।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 96 से 99)

☆ ☆ ☆

यह पता होना चाहिए कि उन्होंने आगे क्या करना है। यहां तो काफ़ी पढ़े लिखे लोग मौजूद हैं, इसलिए अगर आप हर रीजन में ऐसे लोगों पर आधारित एक कमेटी बना लें तो वे छात्रों को कौंसलिंग मुहय्या कर सकती है। अगर हर जमाअत या हर रीजन में कमेटी बनाना मुम्किन नहीं तो कम से कम एक सैंटर्ल कमेटी तो होनी चाहिए जोकि छात्रों की रहनुमाई कर सके। बजाय इसके कि वे कहीं और पैसे ख़र्च करें , वे कौंसलिंग के लिए आपके पास आएं।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी इशाअत से पूछा कि आप अख़बारों में आर्टीकल इत्यादि लिखने के अतिरिक्त और क्या-क्या काम करते हैं? इस पर सेक्रेटरी इशाअत ने निवेदन क्या: हम बुक स्टोर को manage कर रहे हैं और अब Amazon पर किताबें फ़रोख़्त करना शुरू की हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अब ऐडीशनल वकीलुल इशाअत बराए तरसील का तक़र्रुर हो चुका है। इसलिए आपका उन के साथ सम्पर्क होना चाहिए। जैसे ही कोई नई किताब छपे उस की मालूमात आपको मिलनी चाहिऐं और आप फिर उन्हें बताएं कि आपको कितनी किताबों की ज़रूरत है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी इशाअत ने निवेदन किया कि जहां-जहां मुबल्लग़ीन निर्धारित हैं वहां लाइब्रेरीज़ मौजूद हैं लेकिन पब्लिक के लिए कुछ जगहों पर लाइब्रेरीज़ नहीं हैं क्योंकि वहां जगहें नहीं हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि आइन्दा जब आप मस्जिद इत्यादि के नक़्शा की ड्राइंगज़ बनाते हैं तो इस में लाइब्रेरी के लिए भी जगह मुक़र्रर क्या करें।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad